रंग बिरंगे डायमंड कामिक्स में

हंसा हंसा कर लोट पोट करने वाले कार्टूनिस्ट 'प्राण' का जीवन्त चरित्र • **चाचा चौधरी**

• चाचा चोधरी का दिमाग कम्प्यूटर से भी ज्यादा तेज चलता है और बलशाली 'साबू' जुपिटर का प्राणी है !

• **चाचा चौधरी** का दिमाग और 'साबू' की शक्ति हमेशा दूसरों की भलाई के लिये प्रयोग की जाती है । इनके कारनामें मनोरंजन के साथ शिक्षा प्रद भी हैं !



3/50

चाचा चौधरी और शिकारी लकड़बग्घा सिंह

चाचा चौधरी और 'साबू' के अन्य कारनामें

चाचा चौधरी और बोतल का जिन्न	3.00	चाचा चौधरी और आदम खोर	3.00
चाचा चौधरी की गब्बर सिंह से टक्कर	3.00	चाचा चौधरी अन्तरिक्ष में	3.00
चाचा चौधरी और अकबरी खजाना	3.00	चाचा चौधरी और कैराटे सम्राट	3.00
चाचा चौधरी और साबू का अपहरण	3.00	चाचा चौधरी और बैंक के लुटेरे	3.00

लम्बू मोटू और गद्दारों की टोली 3/50



फौलादी सिंह और ग्लोब का आंतक 3/50



आपकी प्रिय पत्रिका
अंकुर
का नया अंक
लाटरी का टिकट 3/-



अन्य उपलब्ध डायमंड कामिक्स

चाचा भतीजा और दाढ़ी वाली बुढ़िया	3.00
चाचा भतीजा और तिलस्मी तलवार	3.00
चाचा भतीजा और मायावी राक्षस	3.00
राजन इकबाल और खून पीने वाले	3.00
राजन इकबाल और नकाब पोश ब्लैक मेलर	3.00
मामा भांजा और बीरबल की सूझबूझ	3.00
फौलादी सिंह और अन्तरिक्ष में तबाही	3.00
फौलादी सिंह और उड़नतश्तरी का रहस्य	3.00
ताऊ जी और लालची जादूगर	3.00

हिन्दी अंग्रेजी में एक साथ उपलब्ध

नई डायमण्ड बाल पाकेट बुक्स

लम्बू मोटू और खूनी पिशाच	2.00
लम्बू मोटू पिशाच का आंतक	2.00
फेन्टम और राकी	2.00
फेण्टम और सुप्रीमों	2.00
फौलादी सिंह और पृथ्वी के देवता	2.00
फौलादी सिंह और ज्यूपिटर की तबाही	2.00
चाचा भतीजा और तिलस्मी गुफायें	2.00
चाचा भतीजा और लंगडा राक्षस	2.00
चाचा चौधरी और खूनी दरिन्दे	2.00
टार्जन का खूनी खेल	2.00

आर्डर के साथ आधा मूल्य एडवांस मनीआर्डर से भेजे । डाक व्यय अलग ।

फ़िल्मी गीतों के अनूठे संकलन

फ़िल्मी राष्ट्रीय गीत 4/-
भूले बिसरे फ़िल्मी गीत 4/-
दर्द भरे फ़िल्मी गीत 4/-

अपने नन्हे मुन्नों की देखभाल कैसे करें, उनमें अनुशासन, शिष्टाचार कैसे लायें - पढ़िये डायमंड **बेबी हैल्थ गाइड** 6/-

हास्यरसावतार काका हाथरसी का अनूठा संकलन
काका के चुटकुले 4/-

डायमंड कामिक्स

2715 दरिया गंज, नई दिल्ली-110002



राजाजी
हुक्केदार, जाओ महामंत्री को बुला लाओ ! आज मैं उसकी खिचाई करना चाहता हूं ।
महामंत्री, कल मैं और मेरी सबसे नयी हरियाणे की रानी रनिवास की सीढ़ियों पर बैठ मूंगफलियां खा रहे थे तो उसने बताया कि महल में उसके इलाके का एक भी आदमी नौकर नहीं है...
मिरा तो सिर ही अपनी नवेली रानी के सामने झुक गया । अपने हो राज्य के एक प्रदेश के लोगों के साथ यह अन्याय क्यों, बाकी सारे राज्यों के लोग किसी न किसी पद पर हमारे किले और महल में काम कर रहे हैं मेरी बात का जवाब दो ।
महाराज उस इलाके के लोग उजड्ड और गंवार हैं मह में नौकर रखने लायक न
यह तो बड़ा ढीला सा जवाब है । लगता है तुम उस इलाके के लोगों से अपनी कोई खुन्दक निकाल रहे हो ।
यह मेरा शाही हुक्म है । फौरन उस इलाके के लोग महल की नौकरियों में भर्ती करो । बहाने बाजी नहीं । वरना नयी रानी मुझे पान में ज्यादा तम्बाकू और चूना लगा कर देगी ।
ठीक है हजूर, मेरा क्या जाता है ? सबसे पहले नयी रानीं के महल में ही हरियाणे का संदेशवाहक भर्ती करता हूं ।
देखा चाचा मैंने किस तरह राजा को पट्टी पढ़ा हरियाणे वालों के लिये महल के रास्ते खुलवा दिये । अब तुम जाओ दरबार में, अदब से कहना राजा साहब को कि नयी रानी याद फर्मा रही हैं ।
ओयें रज्जे, तनें रानी बुला रही है । जल्दी आ जा ।
मैंने पहले ही कहा था महाराज

आपका भविष्य

पं॰ कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं॰ हंसराज शर्मा

मेष : श्रम द्वारा कार्य सिद्ध होंगे, कुछ रुके काम बन जायेंगे, किसी अप्रिय समस्या का निवारण होगा, कोई विशेष सफलता मिलेगी, काम-धन्धों में प्रगति, लाभ यथावत ही होगा।

वृष : रोजगार बढ़ेगा, मन में शुभ विचार जागेंगे, विशेष सूचना आयेगी, शत्रु पर विजय, वाद-विवाद से बचना चाहिए, काम-धन्धों से लाभ होता रहेगा, यात्रा सफल रहेगी।

मिथुन : कारोबार से सामान्य लाभ, व्यय बढ़ेगा, स्वजनों से मदद, अचानक वैर-विरोध से परेशानी होगी, राजकीय कामों में दौड़-धूप ज्यादा, हालात कुछ सुधरेंगे।

कर्क : काम रुक-रुक कर बनेंगे, लाभ एवं प्रगति के चांस मिलेंगे, घरेलू योजना पर व्यय अधिक होगा. अफसरों से मेल-जोल बढ़ेंगे, शुभ-अशुभ मिश्रित फल मिलेंगे, शुभ कार्य पर खर्च।

सिंह : स्थाई काम-धन्धों से लाभ होता रहेगा, परिश्रम अनुसार सफलता एवं लाभ मिलेगा, यात्रा का विचार अचानक ही बनेगा, नया काम न करें, धार्मिक कामों में रुचि बनी रहेगी।

कन्या : श्रेष्ठ फलों का संचार होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी, परिश्रम से काम बनेंगे, लाभ यथापूर्व होगा, काम-धन्धा ठीक चलेगा, सेहत नरम, मन में उत्साह बना रहेगा।

तुला : यात्रा छोड़ दें, काम देर से बनेंगे, कारोबार से लाभ होता रहेगा, बुरे लोगों से बचें, जल्दबाजी से काम न लें, हालात कुछ ठीक होंगे, भाग्य साथ देगा, बिगड़े काम बनेंगे।

वृश्चिक : व्यापार में प्रगति, यात्रा में लाभ, सुख साधनों में वृद्धि, धन की चिन्ता या काम देर से बन पायेंगे, स्थाई काम-धन्धों से लाभ होता रहेगा, नया काम नहीं करना।

धनु : परिश्रम द्वारा किए काम सफल होंगे, रोजगार ठीक चलेगा,भाग्य साथदेगा गृहस्थी के कामों में व्यस्तता रहेगी, यात्रा की आशा है, शुभ कार्य पर खर्च, अफसरों से मेल-जोल बना रहेगा।

मकर : शत्रु पक्ष से बचना चाहिए, काम-धन्धों में सुधार होता महसूस होगा विशेष समाचार से यात्रा का विचार बनेगा, परिश्रम एवं भाग-दौड़ काफी रहेगी, काम बन जायेंगे।

कुम्भ : व्यय की अधिकता या कम आमदनी के कारण चिन्ता, दौड़-धूप बेकार रहेगी, मित्र साथ देंगे, कोई विशेष काम बन जायेगा, परिश्रम द्वारा काम बन सकेंगे।

मीन : अशुभ फलों के साथ शुभ फल भी होंगे, आय में वृद्धि, वाद-विवाद से बचें, कारोबार से लाभ होगा, यात्रा सफल पर करें सावधानी से, रोजगार ठीक चलेगा, भाग्य सहारा देगा।

आपके पत्र

आज ही अंक 10 मिला। सभी स्तंभ पसन्द आए। खासकर राजाजी, मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल इत्यादि बहुत अच्छे थे। परन्तु एक शिकायत है कि दीवाना बहुत देर से पहुंचता है। आशा है इस ओर ध्यान देंगे।

अमन खन्ना—रांची

अचानक एक दिन मुझे दीवाना का अंक 10 मिल गया। उसमें प्रकाशित प्लास्टिक युग, आस्ट्रोटर्फ और सिलबिल चित्र कथायें इतनी अच्छी लगीं की अब मैं दीवाना पाक्षिक पत्रिका का दीवाना हो गया हूं। मुझे दसवें अंक में प्रकाशित राजाजी और 9वें एशियाई खेल चित्र कथा बड़ी हास्याष्पद लगी। परन्तु मोटू-पतलू, चित्र कथा खौफनाक और रोमांचकारी लगी तथा आपस की बातें स्तम्भ में चाचा बातूनी के उत्तर बड़े सटीक और मजेदार लगे। इसके अलावा विक्रान्त की कहानी 'चक्कर बुरा नकल का' ने हंसाते-हंसाते लोट-पोट कर दिया। परन्तु दीवाना में खेल-खेल स्तम्भ में यह लिखा हुआ था कि रवि, शास्त्री गुलाम पारकर और सुरूनायक का चयन संदेहास्पद ढंग से हुआ है। इनमें से गुलाम पारकर तथा सुरूनायक का चयन तो अवश्य संदेहास्पद था। परन्तु रवि शास्त्री के चयन को संदेहास्पद बताना सर्वथा गलत था। क्योंकि रवि शास्त्री ने गई भारत, इंग्लैंड शृंखला में बल्ले और गेंद से अच्छा प्रदर्शन किया था।

राजसिंह राठौर 'चेतक'—राजस्थान

दीवाना का अंक 9 मिला, 'पांडे जी की व्यायामशाला' अच्छी लगी। शेष रचनायें भी स्तरीय थीं। बाल पत्रिकाओं की भीड़ में दीवाना श्रेष्ठ स्थान रखती है। इसकी सामग्री रोचक, ज्ञानवर्द्धक, एवं सराहनीय होती है।

श्रीराम अम्स्टष्ट—तिलौथू, राजस्थान

'दीवाना' वर्ष 1982 का अंक 9 अति मुश्किल से मिला। यह अंक बड़े चाव लगाव से पढ़ा। शिशिर विक्रांत द्वारा लिखित 'चक्कर बुरा नकल' का हास्य कहानी, लल्लू की हरकत व जो मक्खियां नहीं मारते वे क्या करते हैं? स्वभाविक लगा, अच्छी खबर बुरी खबर, प्लास्टिक युग और नवें एशियाई खेल बेहद पसन्द आये। यह अंक बेहद अच्छा लगा। सम्पादक जी कृपया आप समय पर अंक निकाला करो, वरना हम जैसे सीधे पाठक इससे वंचित रह जाते हैं।

राजेश्वर श्रेष्ठ—काठमांडो

हंसी का खजाना यानि दीवाना का अंक 11 मिला। पढ़ कर इतनी खुशी हुई कि आप अनुमान नहीं लगा सकते। हंसी से भरपूर होने पर मोटू-पतलू की कमी खटकी। प्रथम पृष्ठ पर मोटू-पतलू लिखा होने पर भी अन्दर मोटू-पतलू का नामो निशान न मिला।

राडार के नए दीवाने मॉडल, एशियाई खेल और तुम्हारा तेल के व्यंग्य चित्रों ने हंसाकर लोट-पोट कर दिया।

रामकिशन जुंनू—नई दिल्ली

मुख्य पृष्ठ पर

चल मेरे साथी,
चल मेरे यार,
साड़ी पर है धुन तैयार,
चिल्ली बजार
मस्त ठिठार

दीवाना

अंक : 14 वर्ष : 18, 15-31 जुलाई 1982

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज़ पाक्षिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

शौकीन सिंह

-- शिशिर विक्रांत

शौकीन सिंह की शौकीन तबियत की टक्कर लेने वाला मुहल्ले में तो कम से कम कोई नहीं था। बला के शौकीन थे, शौकीन सिंह और शौक भी सब बड़े ऊंचे किस्म के। एक से एक नई डिजाइन के कपड़े पहनना यों भी शुद्ध विदेशी। चाहे पहनावे से वो सर्कस के जोकर को भी मात करते थे।

घड़ी, जूते, मोजे, रूमाल वगैरह तो उनके विदेशी होते ही थे। बनियान और अंडरवियर तक विदेश के ही बने होते थे। देशी चीज का नाम सुनते ही शौकीन सिंह इस तरह नाक-भौंह सिकोड़ लेते मानो किसी वाहन से कुचले हुए लावारिश कुत्ते को देख लिया हो। यही वजह थी कि वो देशी घी भी हाथ तक से नहीं छूते थे।

विदेश और विदेशी चीजों से शौकीन सिंह का रिश्ता इतना गहरा क्यों था? यह तो वही जानते हैं। पर हां, जब वो कहते-'अजो हमारा बस चले तो सिर के बाल, दाढ़ी और मूंछ भी हम विदेश में ही कटवाएं' तो उनके विदेश प्रेम की एक झलक सुनने वालों को जरूर नजर आ जाती थी। यह बात दीगर है कि शौकीन सिंह को कभी विदेश जाने का मौका हाथ नहीं लगा है।

एक बात और, शौकीन सिंह गांठ के भी एक दम पूरे हैं। हथकरघे का बना कपड़ा विदेशी बताए जाने पर उसे बड़े गर्व से पहन लेते। और विदेशी वस्तु को, चाहे कितनी भी उम्दा क्यों न हो, यदि कोइ देशी बता देता तो जनाब ऐसे बिदक जाते, जैसे घोड़ा पटाखों की आवाज से बिदकता है।

लेकिन एक दिन उनका दिमाग भी पलट गया। विदेश और विदेशी वस्तुओं से बुरी तरह चिढ़ हो गयी। शुद्ध देश प्रेमी बन गये वो।

दरअसल हुआ यह कि शौकीन सिंह गाने सुनने के बहुत शौकीन थे। गाने भी फिलमी। उनके इस शौक को पूरा करने में रेडियो या ट्रांजिस्टर काफी सहायक हो सकते थे। पर साथ ही मुसीबत यह थी कि उनकी घरवाली को गाना सुनना एकदम नापसंद था। कानों में अगर फिल्मी गाने की तर्ज भी पड़ जाती तो कानों को हाथों से कस कर दबा लेतीं मानो कि कोई गालियाँ दे रहा हो।

शौकीन सिंह ठहरे शत-प्रतिशत पत्नी-भक्त। पत्नी की मर्जी के खिलाफ काम करने में पतलून ढीली होती है। सो पत्नी की नापसंदगी की वजह से उनका एक बड़ा शौक सालों से दिल में ही दफन रहा। रेडियो या ट्रांजिस्टर खरीदने का सीधा मतलब था, उसका घर में बजना, जबकि उनकी इस दिली इच्छा को, उनके मुंह से एक-दो बार सुनकर, पत्नी ने सख्त स्वर में आगाह कर दिया था, 'घर में या तो रेडियो-ट्रांजिस्टर रहेगा, या मैं रहूंगी। एक तलवार ही एक म्यान में रह सकती है।'

शौकीन सिंह भी यह सोचकर किसी तरह अपनी दिली तमन्ना को तोड़-मरोड़ देते थे कि, घरवाली ही न रहेगी तो घर कैसा? और घर के न होने पर रेडियो या ट्रांजिस्टर रखा कहां जाएगा…

एक दफा किसी घरेलू मामले को लेकर पति-पत्नी में तू तू-मैं मैं हो गई। श्रीमती जी की त्यौरियां चढ़ गईं सिर तक। गुस्से से मुंह टमाटर सा लाल हो गया। फौरन मायके जाने की तैयारी कर ली। शौकीन सिंह ने काफी मनाया, नहीं मानीं।

सौ बार अपना दोष स्वीकार करते हुए उट्ठक-बैठक कीं, सजा के तौर पर। लेकिन जरा भी नहीं पिघलीं, और अनिश्चित काल के लिए मायके चली गईं।

पत्नी की अनुपस्थिति में तहे-दिल से

शेष पृष्ठ ८ पर



पृष्ठ ६ से आगे

उदास और परेशान। शौकीन सिंह को एकाएक अपने शौक का ध्यान आया। उन्होंने सोचा-एक ट्रांजिस्टर खरीद लिया जाए। मौका अच्छा हाथ आया है। मनोरंजन भी हो जाएगा। साथ ही शौक भी पूरा हो जाएगा' पर बाधा आड़े आई देशी-विदेशी की। वो विदेश निर्मित ट्रांजिस्टर ही चाहते थे। क्योंकि ट्रांजिस्टर रखने-सुनने से कहीं बड़ा शौक था, उसका विदेशी ही होना।

इसी दौरान संयोग से, उनकी एक ऐसे जनाब से मुलाकात हो गई, जो अपना विदेशी ट्रांजिस्टर बेचना चाहते थे। हो सकता है, शौकीन सिंह की बात सुनकर ही उन्होंने अपना ट्राँजिस्टर बेचना चाहा हो। उनकी बात से ही, बिना देखे समझे शौकीन सिंह ने मुंह मांगे दाम पर ट्रांजिस्टर खरीद लिया। ट्रांजिस्टर में क्या विशेषताएं हैं, यह उन्होंने जानना भी नहीं चाहा। उनकी नजर में ट्रांजिस्टर का फॉरन-मेड होना ही, उसकी लाख बिशेषताएं थीं। गांठ के पूरे जो ठहरे।

दो-तीन दिन तो ट्रांजिस्टर की आवाज ठीक रही, पर बाद में वह बेसुरे राग अलापने लगा। मालूम पड़े, बर-सात में गधा रेंक रहा हो। या डंडे मार-मार कर किसी गायक से गवाया जा रहा हो। गाने कम सुनाई पड़ें भांय-भांय ज्यादा।

ट्रांजिस्टर की यह शरारत तो शौकीन सिंह सहन करते रहे। पर दो-तीन दिन बाद ही उसमें एक नई बीमारी और लग गई। लगाना चाहें कोई स्टेशन तो पकड़ ले कोई दूसरा स्टेशन। एक ही जगह से दूसरा तो कभी तीसरा, और कभी तो चौथे स्टेशन तक पहुंच जाए।

अगर एकाध मिनट के लिए फिल्मी गाने की एक पंक्ति सुनाई पड़ती-'तेरी दुनियां मैं दिल लगता नहीं, वापस बुला ले''' तो अगले ही पल दूसरे केन्द्र से विज्ञापन आने लगता—'यदि आपका दिल न लगता हो तो भरपूर मनोरंजन के लिए अमुक टी. वी. खरीदिए और तत्काल ही तीसरा स्टेशन भी अपनी उपस्थिति जता देता, महिला कार्यक्रम के जरिये—'''' भोजन यदि अरुचिकर हो तो भी मनुष्य उदास हो जाता है। भोजन को रुचिकर बनाने के लिए अब पेश है, आम अचार बनाने की एक नई विधि ''''और फिर तुरन्त ही चौथे केन्द्र से कबीरदास के दोहे सुनाई पड़ने लगते—'तूने रात गंवाई सोय के, दिवस गंवाया खाय। हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय'''"

शौकीन सिंह परेशान, ट्रांजिस्टर के कान उमेठते-उमेठते, यानी बटन घुमाते-घुमाते थक जाएं, पर हाल वही ढाक के तीन पात। ट्राँजिस्टर अपनी शरारत से बाज ही न आये।

उन्होंने सारे मौहल्ले वासियों, परिचितों, रिश्तेदारों वगैरह से अपनी भयंकर मुसीबत कह सुनाई, पर सभी ने मजाक ही उड़ाया। एक शुभचिंतक ने सलाह दी, ट्रांजिस्टर को किसी कुशल कारीगर से ठीक करवा लो। इसमें इतना परेशान होने की क्या जरूरत है''' ' तो दूसरे शुभचिंतक ने सलाह दी, "अजी, सपने में भी कभी ट्राँजिस्टर लेकर कारीगर के पास मत जाइएगा। विदेशी वस्तु के बारे में देशी कारीगर क्या समझे। ट्रांजिस्टर का कोई पुर्जा-पुर्जा निकाल या बदल लिया तो लेने के देने पड़ जायेंगे। हां, कोई विदेशी कारीगर मिल जाए तो ठीक है।"

शौकीन सिंह को सलाह उचित ही लगी। पक्का इरादा कर लिया कि कारीगर फटकेंगे भी नहीं। हां, विदेशी कारीगर की खोज में जरूर लग गए।

विदेशी कारीगर तो मिला नहीं, बल्कि तीन-चार दिन के बाद ट्रांजिस्टर को एक नया रोग और लग गया। वो यह कि—आवाज पूरे जोर से निकलती यानी कि स्पीकर बीमार, आवाज धीमी न हो। अजीब मुसीबत या तो ट्रांजिस्टर 'फुलवॉइस' पर चलाओ और मजबूरन सुनो, या बिलकुल ही बंद कर दो।

शौकीन सिंह थे, गाने सुनने के अपार शौकीन। ट्रांजिस्टर बंद करना कैसे गवारा होता? लिहाजा कानों में रूई ठूंस कर ट्रांजिस्टर सुनने लगे।

लेकिन मुसीबत अकेली नहीं आती। जल्दी ही अगल-बगल वालों ने शिकायतें करना शुरू कर दिया, 'ट्रांजिस्टर सुनना ही है तो अकेले सुनो। सारे मोहल्ले को जबर्दस्ती क्यों सुनाते हो? सिर बुरी तरह दर्द करने लगा है। कान पक गए, दिन भर की अगड़म-बगड़म सुनने से।'

और तो और, सारे मोहल्ले के बीसियों कुत्ते-पिल्ले शौकीन सिंह के दरवाजे पर ही जमे रहें। घर के अंदर ट्रांजिस्टर भौंके और बाहर कुत्ते। मकान मलिक ने भी आजिज आकर, अपना आदेश कठोर स्वर में सुना दिया, "जनाब शौकीन सिंह जी, या तो ट्रांजिस्टर रूपी इस भीषण बला को बंद करिए, नहीं तो तुरन्त ही मकान खाली कर दीजिए।'

शौकीन सिंह बेचारे अब बने घन-चक्कर, ट्रांजिस्टर को बंद करना उन्हें अपने सम्मान के सख्त खिलाफ लग रहा था। दूसरी ओर मोहल्ले वालों की ढेरों शिकायतें और मकान मालिक की मकान खाली कर देने की धमकी उस दिन वो ट्रांजिस्टर के जटिल मसले में डूबे हुए, किसी निश्चय पर पहुंचने की गंभीर कोशिश कर ही रहे थे कि घर के बाहर रिक्शा रुकने की आवाज आई।

शौकन सिंह हाथ में ट्रांजिस्टर, जो उस समय भी फटे गले से चीख रहा था, को लेकर दरवाजा खोलने के लिए आए। जेसे ही दरवाजा खोला, बाहर ही विराजमान पूरे स्वर में भौंक रहे बीसियों कुत्तों ने उनके ऊपर धावा बोल दिया। अचानक के इस आक्रमण से शौकीन सिंह तीन चार जगह से घायल हो गए।

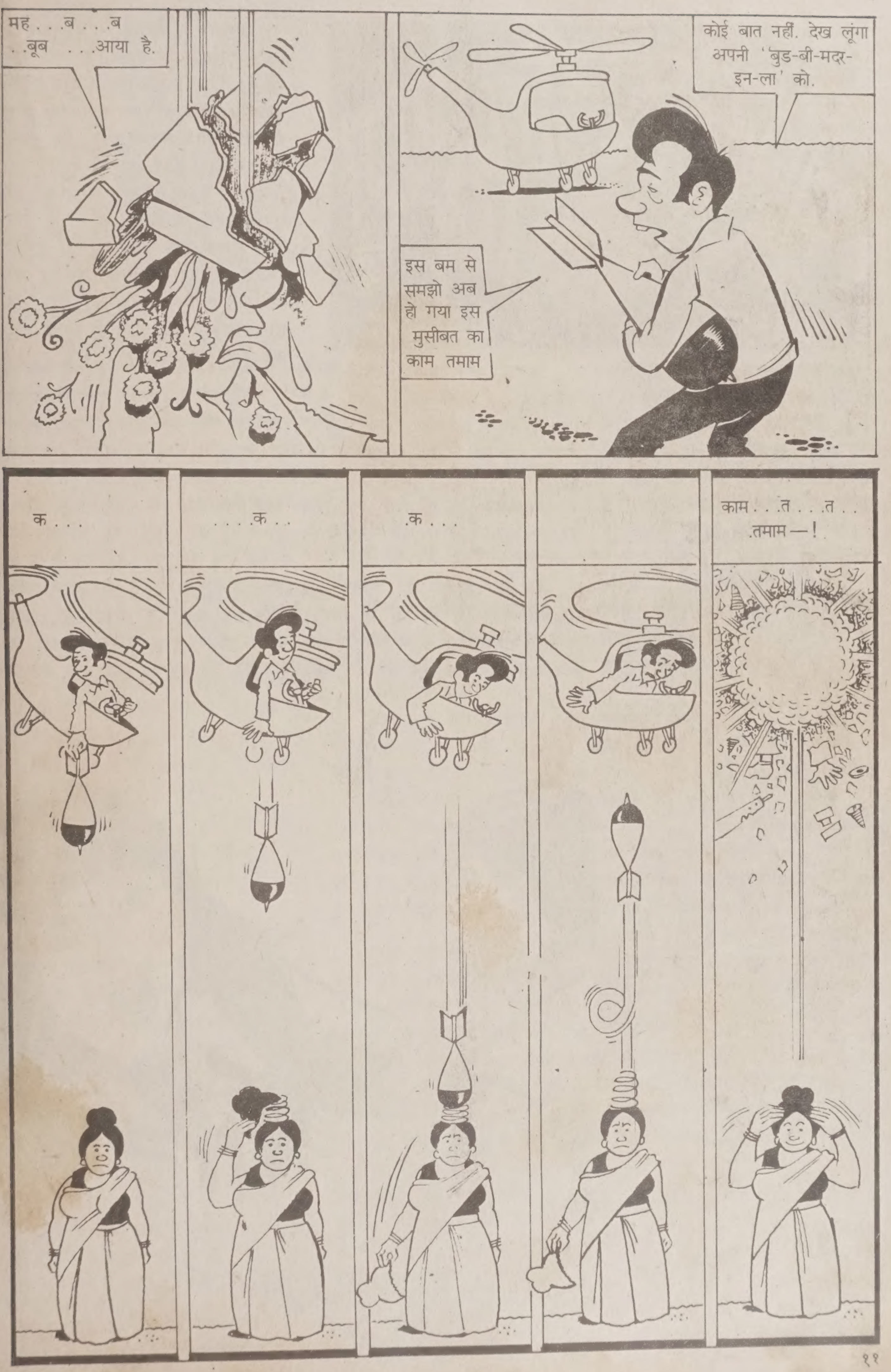
रिक्शे से उनकी घरवाली ही आई थीं। उन्होंने दौड़ कर पतिदेव को बचाया। ट्रांजिस्टर देखकर उन्होंने गुस्से से, उसे इतनी जोर से जमीन पर दे मारा कि उसका थोबड़ा ही बिगड़ गया फिर पतिदेव से ट्रांजिस्टर की पूरी दास्तान सुनकर बोलीं, 'मैं तो पहले ही मना करती थी कि इस शौक को मत पालो' पर शौकीन सिंह महसूस कर रहे थे कि उन्हें इतनी मुसीबतें ट्रांजिस्टर की वजह से नहीं, बल्कि उसके विदेशी होने की वजह से हुईं।

उसी दिन से उन्होंने हिंदुस्तान की कसम खाते हुए निश्चय किया कि भविष्य में कभी भी किसी विदेशी वस्तु से लगाव न रखेंगे, न उसका उपयोग करेंगे। कहना न होगा, शौकीन सिंह उसी दिन से पूर्ण स्वदेशी बन गए। अंदर से भी, बाहर से भी। ●



बिल्कुल आसान और मज़ेदार!
जीतने के लिए १,००,००० रुपये से ज़्यादा के पुरस्कार!
कॅमल कलर प्रतियोगिता '८२
सर्वश्रेष्ठ प्रवेशिका को १००० रुपये का कॅमल स्टुडेंट स्कॉलरशिप प्राप्त होगा. इस प्रतियोगिता का विस्तृत विवरण कॅमल आर्ट मटीरियल के हर पैक के साथ उपलब्ध है.
इस लिए जल्दी कीजिये. प्रवेशिकाओं के लिए अंतिम तारीख़ ३० सितम्बर १९८२ है.
कॅमल
बच्चों की कल्पनाओं में रंग भरता है.
कॅम्लिन प्राइवेट लिमिटेड
आर्ट मटीरियल डिविज़न,
जे. बी. नगर, बम्बई ४०००५९
camlin
FIFTY YEARS OF SERVICE
Vision 825/HIN


लवस्टोरी
लिल्ली की मुटल्ली मां से आंख बचा कर आज मैं अपने प्यार भरे फूलों का उपहार प्रेमिका तक पहुंचा कर रहूंगा.
वह रही. वह रही मेरी जाने तमन्ना.
फिर आ गया यह सर फिरा बेबी को बहकाने के लिये!
मैं फूलों का गुलदस्ता बरसा दूं. यहां मनहूस आया है.
बहारो फूल बरसाओ, यहां महबूब आया है.



मह . . .ब . . .ब . .बूब . . .आया है.
कोई बात नहीं. देख लूंगा अपनी 'बुड-बी-मदर-इन-ला' को.
इस बम से समझो अब हो गया इस मुसीबत का काम तमाम
क . . .
. . . .क . . .
.क . . .
काम. . .त . . .त . . .तमाम —!



'शुक्र है भगवान का कि तुम आ गये हरी' वह बोली वह बदमाश मि. जीटर और उसके साथी मुझे सैलर में बन्द कर गये थे और कह गये थे कि मुझे तहखाने में ही रहना होगा जब तक वे वापिस न आ जायें । तुम्हारे साथ पुलिस मैन भी दिखाई दे रहे हैं, मैं चाहती हूं उन्हें फौरन गिरफ्तार कर लिया जाये ।'

'उन्हें सम्भाल लिया गया है मैडम', ह्यूगो ने नीचे को झुक अभिवादन करते हुए कहा,'बेशक हम लोग यहाँ ऐसे काम से आये हैं जिसका आप से खास सम्बन्ध है ।'

'यह मि. ह्यूगो हैं' हरी ने उत्सुकता पूर्वक कहा, 'यह कहते हैं ये डेडी को निर्दोष साबित करा सकते हैं ।'

'वाकई ? यह तो बहुत ही अच्छा होगा,'उसकी माँ ने कहा ।

'यह साबित करने के लिए हमें मि. चंदू घंटे या मि. हरीश की लायब्रेरी में जाने की इजाजत मिलनी चाहिए 'ह्यूगो ने कहा' शायद हमें कुछ तोड़-फोड़ भी करनी पड़े । मैं आप को विश्वास दिलाता हूं यह आप के पति को निर्दोष सावित करने के लिए निहायत जरूरी है । क्या हमें आप की इजाजत है ?'

'हां, हां ! कुछ भी करो यदि महेश को निर्दोष साबित करने के लिए पूरा घर भी गिराना पड़े तो कोई परवाह नहीं ।

'धन्यवाद ! अब मैं आप से हरी, और श्याम से लायब्रेरी के बाहर रहने का अनुरोध करूंगा, जब तक मैं और मेरे आदमी लायब्रेरी के भीतर काम करें । आप लोग किसी से भी कोई बात नहीं करेंगे, यदि फोन की घंटी भी बजे तो कोई उसका उत्तार न दे, ठीक है ?,

'बेशक ! मि. ह्यूगो मैं और लड़के रसोई घर में रहेंगे और कुछ खायें पीयेंगे, मैंने भी बहुत देर से कुछ भी नहीं खाया । आप अपना काम करो मि. ह्यूगो ।

'धन्यवाद ! ह्यूगों बोला, फिर राजू की ओर मुड़कर बोला, 'हमें लायब्रेरी ले चलो, बेटे ।

इस बीच श्याम और राजू किस अद्भुत चक्कर में पड़े हैं से बेखबर महिन्दर अपने घर में अपने पिता के साथ बैठा टेलीविजन देख रहा था । उसके पिता फिल्म उद्योग के तकनीकी विशेषज्ञ थे और अक्सर फिल्म निर्माण के लिए संसार में दूर-दूर जाया करते थे ।

महिन्दर का दिमाग टी. वी. जासूसी कहानी में नहीं लग पा रहा था, वह अब भी चंदू घंटे की अजीब घड़ी और उसके रहस्य के बिषय में सोच रहा था और जैसे ही प्रोग्राम समाप्त हुआ, वह अपने पिता से एक प्रश्न पूछ ही बैठा ।

'क्या मैं चंदू घंटे को जानता था, हाँ बिलकुल,दो तीन फिल्मों के दौरान मेरा उनसे सम्पर्क हुआ था। वह क्या स्कीमें बनाता और क्या-क्या खेल दिखाता था? उसे आलू के चिप्स खाने का बहुत ही शौक था और क्या चीख थी उसकी,खून जम जाता था उनसे ।

महिन्दर ने तुरन्त अपने पिता से पूछा चंदू घंटा कैसे ट्रिक दिखाया करता था परन्तु टी. वी. पर आती मनोरंजक जासूसी फिलम में तल्लीन होने के कारण उसके पिता ने उसे कोई संतोष जनक उत्तर न दिया । फिर भी महिन्दर ने सोचा राजू को चंदू के ट्रिक खेलने के विषय में मालूम नहीं है ओर राजू अपने रहस्य की खोज के दौरान हर बात जानना चाहता है । उसने सोचा क्यों न फोन कर उसे इस नई बात से अवगत करा दूं ।



अगर राजू सो भी रहा होगा तो भी वह जानना चाहेगा, 'बहुत देर हो गई,

गीताली

सिंह साहब ने अचानक कहा, उठो महिन्दर तुम भी जा कर सो जाओ।'

'अच्छा, डैडी,' महिन्दर बोला और फोन किये बिना ही उठकर सोने चला गया।

व्यर्थ खोज—

घड़ियों के कमरे में पहुंच मि. ह्यूगो ने अत्यन्त व्यवसायिक रूप धारण कर लिया, उन्होंने अपने दोनों साथियों से कमरे के परदे ठीक से बन्द करवा दिये, फिर कमरे में बत्तियां जला चारों ओर का निरीक्षण किया।

'सैकड़ों किताबें' 'वह बड़बड़ाये, तीन चित्र,हो सकता है बेकार ही हों। एक बड़ा सा शीशा, ढ़ेर सी घड़ियां, कुछ पेनल लगी दिवारें जहां गुप्त स्थान को छुपाया जा सकता है।अब पहला संदेश कहता है पुस्तक देखो। दूसरा संदेश हमें घड़ियों के कमरे में पहुंचने का संकेत देता है। तीसरा संदेश! 'अच्छा लड़के वह तीसरा संदेश दिखाओ मुझे।'

राजू ने तीसरे संदेश का ऊपरी फटा भाग मि. ह्यूगो को पकड़ाया। ह्यूगो ने नम्बर देख त्यौरी चढ़ा लीं।

किसी पुस्तक के खास-खास सफो पर लिखे शब्दों के विषय में है यह तो जाहिर है, परन्तु उस खास पुस्तक के बिना व्यर्थ, तुम्हारे विचार से कौन सी पुस्तक हो सकती है, लड़के?'

'मुझे इस विषय में कुछ भी मालूम नहीं श्रीमान' राजू ने उत्तर दिया हालांकि किताब इसी कमरे में कहीं होनी चाहिए।'

'हां, मैं भी यही सोचता हूं, चलो कुछ एक को देखते हैं। ह्यूगो सबसे करीब के शैल्फ के निकट गया और तीन चार किताबें निकाल उन्हें अलटा-पलटा, कुछ न पा कर उसने किताबें, वापिस शैल्फ पर रख दीं।

'उफ! इससे तो कुछ भी पता नहीं चलता और यहां सैकड़ों किताबें हैं इस लिए हर एक को देख पाना नामुमकिन है। फिर भी संदेश तो हमें मिलना ही चाहिये, सोचो लड़के सोचो, तुम तो सोचने में बहुत चतुर हो।'

राजू ने अपने विचारों को शीघ्रता से एकत्रित करने के लिए अपना होंठ दबाया।

मि. ह्यूगो—वह अन्त में बोला?

'हां बेटे!'

'वह संदेश महाराज कुमार के लिये थे और वही इसका रहस्य समझने वाले थे तो सीधी से बात यह निकलती है कि उस पुस्तक का उन्हें मालूम होना चाहिए जिसका जिक्र चंदू घंटे ने संदेश में किया है।'

'बेशक उसे मालूम होगा, हमें केवल फोन कर उससे पूछना भर होगा।'

'परन्तु वे तो हस्पताल में बिमार हैं' यह तो बहुत बुरी बात है ह्यूगो का मुंह लटक गया, 'कोई और तरकीब सोचें।'

'हम उनकी पत्नी से पूछ सकते हैं, शायद उन्हें मालूम हो?

'ठीक, बिलकुल ठीक सोचा। उन्हें फोन करो और पूछो।'

'मैं श्याम से उनसे पूछने को कहता हूं पहले भी वही उनसे मिलकर आया था।

और वह रसोईघर की ओर चलपड़ा जहां श्याम, हरी और उसकी मां के साथ कोक पी रहा था।'

'कुछ मिला पहले!' श्याम ने पूछा।

'अभी नहीं, हमें तुम्हारी सहायता की जरूरत हैं' और राजू ने श्याम को समझा दिया, वह क्या चाहता है। श्याम टेलीफोन वाले हाल में गया, डायरेक्टरी ले महाराज कुमार का फोन नम्बर देखा और फोन मिलाया। फोन उठाने पर श्याम ने मिसेज महाराजकुमार की आवाज पहचान ली।

उसने उन्हें चंदू घंटे के संदेशों में बताई गई रहस्यमयी पुस्तक के विषय में बताया। शायद यह कोई ऐसी पुस्तक है जिसका उसके पति को मालूम है, क्या वे किसी ऐसी पुस्तक का नाम बता सकती हैं जो चंदू घंटे ने संदेश में 'पुस्तक' के नाम अंकित की है?'

'हां, मैं समझती हूं मैं बता सकती हूं।' मि. महाराज कुमार ने कहा, 'काफी साल पहले चंदू ने रेडियो पर अपने अनुभवों के विषय में एक पुस्तक लिखी थी, मेरे पति ने भी उसकी कुछ सहायता की थी उसका नाम था 'घड़ी की आधी रात की चीख, क्या इससे तुम्हारा मतलब हल हो जायेगा?'

'अवश्य हो जायेगा, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद' श्याम बोला। उसने फोन बन्द कर ह्यूगो और राजू को पुस्तक का नाम बताया, वे तुरन्त उलटे पांव लायब्रेरी में पहुंचे और दरवाजा बन्द कर लिया। श्याम कुछ देर और प्रतीक्षा करने के विचार से रसोईघर वापिस चला गया, और सोचता रहा अब क्या नई बात निकलेगी।

कुछ मिनट तक किताबें इधर-उधर करने के बाद ह्यूगो ने एक किताब बाहर निकाली।

'यह रही', वह बोला, घड़ी की आधी रात की चीख चंदू घंटे द्वारा। अब हम आगे बढ़ रहे हैं। संदेश कहां है? दिखाओ मुझे—पृष्ठ 3—शब्द 27, मैं देखता जाता हूं और राजू तुम लिखते जाओ।'

उसने किताब का पृष्ठ 3 निकाला और 27 वें शब्द तक गिनती की, शब्द है 'खड़े हो जाओ' और अब आगे चलते हैं। उसने तेजी से पुस्तक के शब्द निकाले जिन्हें राजू ने साथ-साथ कागज पर लिख लिया और जल्दी ही ह्यूगो फटे संदेश के अन्त तक पहुंच गया। 'बस खत्म, बाकी का संदेश तो गुम हो चुका है, पढ़ो तो हमारे पास क्या हुआ।'

राजू ने संदेश जोर से पढ़ा 'खड़े हो ओ कमरे के बीचों-बीच आधी रात्रि से एक मिनट पहले। अपने साथ दो जासूस और दो पत्रकार रखो, सब हाथ पकड़ कर गोला बना कर खड़े हो जाओ, एक मिनट बिलकुल चुप रहो ठीक आधी के रात के समय—'

'और वह रुक गया, बस मि. ह्यूगो संदेश यहीं समाप्त हो गया है।'

'खुदा की मार यह संदेश हमें कुछ भी बताने से पहले ही खत्म हो गया।' ठीक आधीरात को क्या? क्या होना चाहिए? इसका पता लगाने का क्या तरीका है? चंदू घंटे का दिमाग बड़ा ही तेज था, हम कभी नहीं पता लगा सकते, वह क्या सोच रहा होगा।'

लम्बी सांस ले वह बोला 'अब इसमें कुछ नहीं है, अब हमें इस कमरे को पूरी तरह उधेड़ कर ही देखना पड़ेगा, या तो चित्र इसी कमरे में छिपे हैं या चाबी यहां है या फिर किसी गुप्त स्थान जहां

शेष पृष्ठ १६ पर



नामी चोर
यह खरगोश की दुम तो बड़ी ऊंची चीज़ है गुरू. पता नहीं कहां से आरी उठा लाया है.
कमाल हो गया चेले. अब फटाफट जेल की खिड़की के सरिये काटो और यहां से निकल कर भाग लो.
ठीक है, सरिये काटे चल फटाफट. मैं निगरानी कर रहा हूं. कोई आता न हो.
अरे गजब हो गया. जेलर आ रहा है. कोई तिगड़म लड़ाओ बात बनाने के लिये.
ऐ—! यह क्या किया है?
अजी, यह आर्ट का सीधा सा नमूना पेश किया है.
और मैंने यह आर्ट का टेढ़ा सा नमूना पेश किया है.


सवाल यह है?
सवाल यह है?
तुम अपने कुत्ते को चोर की टांग पकड़ने की जो ट्रेनिंग दे रहे थे, क्या वह पूरी हो गई है?
जवाब हाज़िर है!
हां . .
. . .हो...ग...
. . .गई है.
क्या तुम यह चाहते हो कि हजामत बनवाते समय तुम्हारी गलतिया मैं न देखूं?
जवाब हाज़िर है.
तो क्या तुम यह चाहते हो कि वह गलतियां मैं न देखूं?
क्या तुम्हारा भविष्य इतना अंधकारमय है कि तुम्हें रोशनी की कोई किरण दिखाई नहीं देती?
खूब दिखाई देती है रोशनी की किरण. तुम भी देख लो.
सवाल यह है?
क्या तुम फटाफट नाश्ता नहीं दे सकतीं?
दे तो रही हूं.
अरे—! मेरा पैर फिसल गया

पृष्ठ १३ से आगे

चित्र है कि चाबी यहां है । अच्छा होता यदि हमें मालूम होता हम क्या ढूंढ़ रहे हैं, परन्तु हमें मालूम नहीं है, अब ऐसे ही काम चलाना पड़ेगा ।'

'रुकिएं ! मि. ह्यूगो' क्या वे चीज दिवार पर लगे चित्र तो नहीं हैं ? मेरा मतलब क्या असली चित्रों को छिपाने के लिए उनके ऊपर दूसरे चित्र तो पेन्ट नहीं कर दिए गए ?'

'नहीं, नहीं, मुझे विश्वास है ऐसा नहीं है, फिर भी मैं देख लेता हूं ।'

ह्यूगो ने अपने सबसे करीब की तस्वीर उतारी और बड़े ध्यान से उसका निरीक्षण किया फिर एक कोने से अपने चाकू से पेन्ट खुरच कर देखा ।

नहीं एक बिलकुल फजूल तस्वीर है' वह बोला, हम ऐसा करते हैं अन्य किताबों को भी देखते हैं कि किसी में कोई चाबी तो नहीं छिपी है । फिर हम दिवारों और बुककेसों में खोजेंगे कि कहीं कोई गुप्त आलमारी या स्लाईडिंग पैनल तो नहीं है ।'

'एक क्षण रुकिए' मुझे एक और ख्याल आया है, राजू बोला ।

'अब और ख्याल आ गया अरे तुम्हारा दिमाग तो लट्टू के समान घूमता है । ह्यूगो बोला, अब की बार क्या ख्याल आया है ?

मेरे ख्याल सेअब हम उस पुस्तक में से बाकी का संदेश भी निकाल लेंगे, श्रीमान !'

अच्छा ! अच्छा, बताओ फिर क्या ख्याल है ?'

'जब लोग कोई संदेश बनाने के लिये किसी पुस्तक में से शब्द चुनते हैं तो अक्सर वे उसके नीचे पेंसिल से नन्हा सा चिन्ह लगा देते हैं ताकि उस शब्द का नम्बर गिना जा सके । यदि चंदू घंटे द्वारा चुने शब्दों के नीचे पेंसिल के चिन्ह हुए तो हम सारा संदेश पुस्तक में से ढूंढ़कर पा लेंगे ।'

'गजब की सूझबूझ' ह्यूगो बोले, 'आओ पुस्तक को देखते हैं ।'

जल्दी से दुबारा उन्होंने चंदू घंटे की पुस्तक को खोल कर देखा ।

'राजू तुमने बिलकुल ठीक कहा ! संदेश के लिए चुने हर शब्द के नीचे पेंसिल का हल्का सा निशान है । लो अब तुम्हीं बाकी का निशान ढूंढ़ो !'

राजू ने पुस्तक ले हर पृष्ठ को बड़ा ही धीरे-धीरे सावधानी से खोला। पृष्ठों पर वह केवल नन्हा सा पेंसिल का चिन्ह ढूंढ़ रहा था । कुछ ही समय में वह एक शब्द पर आया, वह उनसे बोला और ह्यूगो ने लिख लिया । पुस्तक को पृष्ठ-पृष्ठ कर खोलने और देखने में काफी लम्बा समय लगा परन्तु राजू इस कार्य में दिलचस्पी रखता था और वह बिना रुके आगे बढ़ता गया ।

आखिरकार राजू को और चिन्ह मिलने बन्द हो गए ।

'अच्छा ! ह्यूगो बोला' अब मैं पूरा संदेश पढ़ता हूं । 'खड़े हो जाओ कमरे के बीचों-बीच अर्धरात्रि से एक मिनट पहले । अपने साथ दो जासूस तथा रिपोर्टर रखना, हाथ पकड़ घेरा बनाकर खड़े होकर एक मिनट तक बिलकुल चुप रहना । अर्धरात्रि को मेरी भेजी हुई घड़ी का अलार्म बजना आरम्भ होगा, उसे पूरी तेज आवाज में बजने देना चीख को चलते रहने देना जब तक मेरा गुप्त स्थान दिखाई न दे ।'

मि. ह्यूगो ने राजू को देखा ।

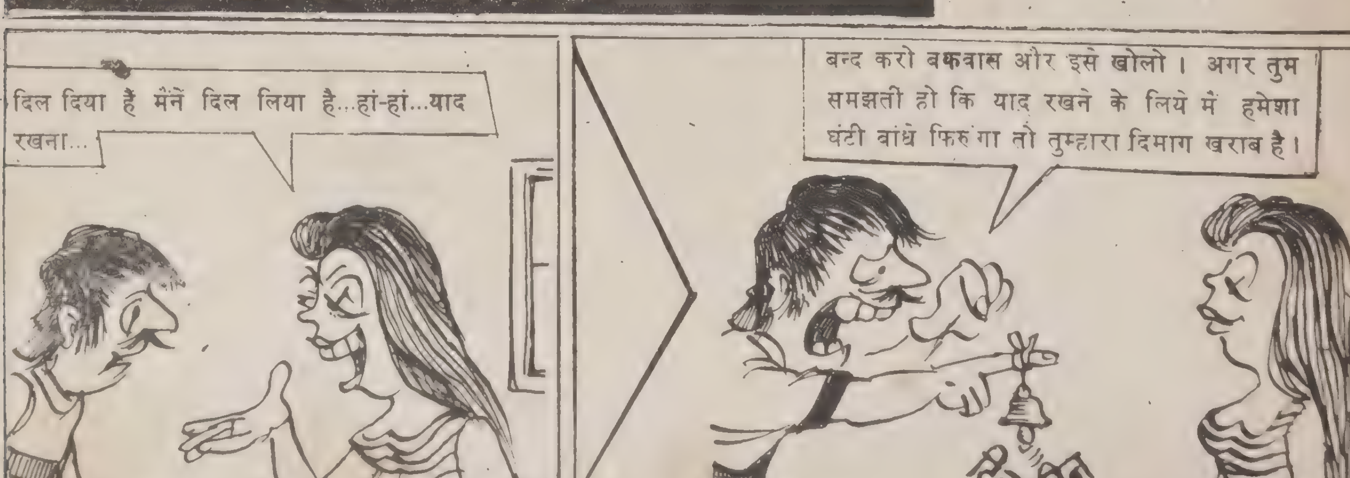
राजू के माथे में बल पड़ गए, यह संदेश आज तक पाए सब संदेशों में अजीब था । मुझे तो ऐसा लगता है जैसे चीखने वाली घड़ी स्वर से कोई यन्त्र चालित हो जाएगा और किसी गुप्त पैनल या वस्तु को खोल देगा । विशेष आवाज से खुलने वाले ताले भी बनाए जाते हैं, कुछ ऐसे होते हैं जो केवल अपने मालिक का स्वर सुन कर ही खुलते हैं । मेरे ख्याल से मि. घंटे की चीख भी कुछ ऐसा ही काम करती होगी ।'

'बिलकुल ठीक, मैं भी ऐसा ही सोचता हूं ।एक ऐसा ताला जो विशेष आवाज से खुलता है ।

'अब, राजू बोला' यदि हमारे पास घड़ी हो तो हम इसकी खोज कर सकते हैं । मेरे ख्याल से आधी रात तक रुकना और हाथ पकड़ने का कोई विशेष महत्व है यह तो केवल हवा बांधने की बात है ।'

'परन्तु बदकिस्मती से एक कठिनाई आगई' ह्यूगो धीरे से बोला, 'घड़ी तो अब है ही नही, गुप्त संदेश खोजते-

बन्द करो बकवास



खोजते मैंने उसके सब अंजर-पंजर अलग कर दिए थे, अब वह कभी भी नहीं चीखेगी।' लम्बी सांस छोड़ कर ह्यूगो बोला, मुझे इसका बिलकुल अनुमान नहीं था, ऐसी भूलें अक्सर मुझसे होती नहीं हैं परन्तु अब कुछ भी नहीं हो सकता, घड़ी तो गई।'

'फिर, मैं नहीं जानता हम क्या कर सकते हैं' राजू बोला।

'एक तरीका है, 'ह्यूगो बोला' तरीका बहुत ही भद्दा है और भद्दापन से मुझे नफरत है लेकिन अब और कुछ किया भी नहीं जा सकता, मेरे आदमी इस कमरे की सारी दिवारें पैनल खोल देंगे, यदि कोई गुप्त स्थान होगा तो अवश्य मिल जायेगा।'

'फ्रेड! उसने अपने एक साथी से कहा बाहर कार से औजार ले आओ, हमें कुछ काम करना है।'

अद्भुत विकास

मि. चंदू की लायब्रेरी पूरी उबड़ खाबड़ हो चुकी थी ऐसा लगता था या तो बम्ब फट गया है या घर गिराने वाले आकर काम करते रहे हैं, अगली बात तो करीब-करीब सही थी। ह्यूगो के आदमियों ने छैनी हथौड़ों से पूरे कमरे पर आक्रमण किया था।

सबसे पहले सारे शैल्फों से सारी किताबें निकाली थीं जिनका जमीन पर ढेर लग रहा था फिर दिवारों से चित्र और शीशे उतार कर नीचे रख दिए थे, फिर सारी दिवारों को करीने से खोला थां, कुछ शैल्फ भी गुप्त द्वार खोजने के प्रयास में उखाड़े गए थे। उन्होंने छत को भी नहीं छोड़ा था पर ठोस प्लास्टर मिलने पर रुक गए थे।

ह्यूगो नाराज और निराश दिखाई दे रहा था 'अब हम हार गए,' चंदू घंटे ने कोई वस्तु ऐसे छिपाई है कि मैं भी उसे खोज निकालने मे असमर्थ साबित हुआ हूं। मैं स्वयं कभी इस बात पर विश्वास नहीं करता।'

'क्या इसका यह अर्थ हुआ कि आप हरी के पिता को निर्दोष साबित नहीं कर पायेंगे? राजू ने पूछा।

चुराए हुए चित्रों के मिले बिना नहीं, लड़के। 'ह्यूगो ने उत्तर दिया' और तुम देख ही रहे हो चित्र हम खोज नहीं पाए हैं, सिवाए इसके कि तुम्हारे दिमाग में कोई नया विचार आ गया हो?'

अब राजू फिर होठ दबाए था कोई नया विचार उसके दिमाग में आ रहा था।

मि. ह्यूगो, घड़ी तो नष्ट हो गयी है परन्तु शायद चीख नष्ट नहीं हुई।'

'इससे क्या मतलब, तुम्हारा?'

एक व्यक्ति है गोबर्धन राय जिनके पास चंदू घंटे के आधीरात की चीख नामक श्रृंखला के हर प्रोग्राम का टेप है हो सकता यह चीख भी उनके किसी टेप पर रिकार्डेड हो। अगर ऐसा है और हम मि. गोवर्धन से टेप और टेप रिकार्डर उधार ले लें तो फिर घड़ी की कोई जरूरत ही नहीं है।'

'तुरन्त उनसे फोन पर पूछो समय का बहुत ही महत्व है।' राजू ने बाहर जा मि. गोवर्धन को फोन किया, पहले तो वे कुछ चक्कर में पड़ गये, पर राजू के समझने से तुरन्त उस चीख को पहचान गए।

'हां, मैं उस चीख को जानता हूं जिसका तुम जिक्र कर रहे हो। अरे हां! उस चीख के कारण बीस वर्ष पूर्व चंदू एक फिल्म में बहुत मशहूर हुआ था, बेशक वह मेरे टेप में हैं मैं इसी सयम उसे निकाल लेता हूं, मैं खुशी से टेप और टेप रिकार्डर तुम्हें उधार दे दूंगा, परन्तु एक बात का मैं तुमसे अनुरोध अवश्य करूंगा, बाद में इस रहस्य के विषय में मुझे बताना होगा।'

राजू ने वादा किया और कहा एक आदमी तुरन्त टेप और टेप रिकार्डर लेने पहुंचेगा। जैसे ही उसने फोन बन्द किया श्याम, हरी और मि. महेशचन्द्र उसकी बात सुनने आयीं। लायब्रेरी की हालत देख वे चौक गई।

'अरे! राजू तुमने तो वाकई में कमरे को तहस-नहस कर दिया, कुछ मिला क्या?

'अभी नहीं' राजू बोला।

'ऐसा लगता है तुम पूरे घर को ही गिरा दोगे' मि. महेश ने कहा 'अगर मुझे पता होता तुम इतना नुकसान करोगे, तो मैं कभी इजाजत नहीं देती।'

हम उस प्रमाण को 'खोज रहे हैं जिससे आप के पति निर्दोष साबित होंगे' मि. ह्यूगो ने नम्रता से कहा 'क्या आप चाहेंगी कि हम प्रमाण ढूढ़े बिना ही रूक जाएं?

अच्छा! नहीं, नहीं बेशक नहीं, मि. महेश ने घबराकर कहा, 'यदि तुम मेरे पति को निर्दोष साबित कर सकते हो तो कोई भी नुकसान अधिक नहीं हैं।

(क्रमशः)

मदहोश



नीलाना

कुत्ता पाल कर देखिये

दुनिया के दीवाने कामों में से कुत्ता पालना भी एक है। कुत्ता घर का सदस्य सा ही होता है। अतः वह आपके सामाजिक जीवन तथा आचार व्यवहार पर अमिट असर छोड़ता है। जीवन में अजीब तरह की दीवानगी आ जाती है। विचारों में क्रांतिकारी परिवर्तन आता है। अब हम कितना भौंकें? आप खुद कुत्ता पाल कर देखिये।

पिल्ला जब घर में आता है कमरे में ही जहां-तहां पाखाना कर देता है। साफ आपको करना पड़ेगा। इसका असर यह होगा कि आपके दिल में मेहतर वर्ग के लिये जो भावना है कि वह गंदे लोग हैं मिट जायेगी। ऊंच-नीच के ख्यालों की बदली छंटने लगती है और समाजवादी नीला आकाश आने लगता है।



लम्बे बालों वाला कुत्ता गोद में उठा कर चलिये। आपके हाथ पर जले के निशान हों या अंगुली कटी हुयी हो तो किसी को पता नहीं लगेगा।



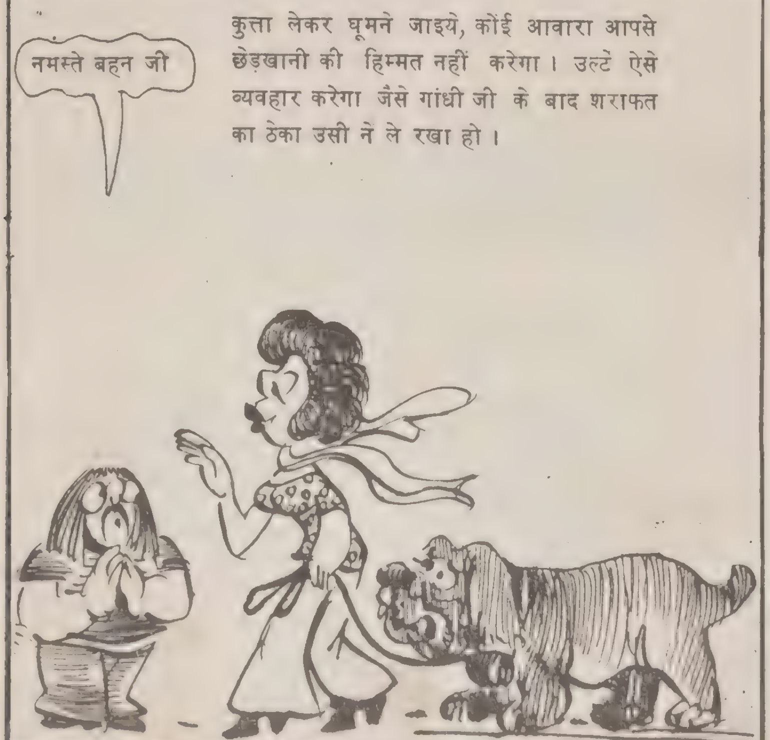
घर में बच्चों वाले मेहमान आयेंगे तो बच्चे कुत्ते के डर के मारे सोफे पर सहम कर बैठे रहेंगे। कोई शरारत करने की हिम्मत नहीं करेगा। न कोई लाइटर खराब कर पायेगा, न ऐनक तोड़ सकेगा ओर न ही मैगजीने फाड़ने पायेगा।



कोई आदमी अचानक घर में प्रवेश नहीं कर पाता। कई बार आपने देखा होगा कोई अचानक आपके घर आया जिसकी आपको आशा नहीं थी। आप बौखला गये और बौखलाहट में मुंह से कुछ उल्टी बात निकल गयी या उचित ढंग से स्वागत करने में घच्चा खा गये तो बाद में बड़ी शर्म आती है। कुत्ता होगा तो किसी के आने पर आप कुत्ते को पकड़ेंगी, उसे बांधेंगी, इतने समय में आपको अपने विचारों को व्यवस्थित करने का अवसर मिलता है आप ठीक ईंट का जवाब पत्थर से देने के लिये स्वयं को तैयार पायेंगी।



कुत्ता लेकर घूमने जाइये, कोई आवारा आपसे छेड़खानी की हिम्मत नहीं करेगा। उल्टे ऐसे व्यवहार करेगा जैसे गांधी जी के बाद शराफत का ठेका उसी ने ले रखा हो।




घर में कुत्ता हो तो बेशक आप सोते रहें, आपके आंगन मे फेंका अखबार सुरक्षित वहीं पड़ा रहेगा। पड़ौसी ललचाई नजरो से देखता रहेगा लेकिन उठाने की हिम्मत नहीं होगी ।
कुत्ता होगा तो उसके जुयें और पिस्सू आपको लगेंगे । पीठ व शरीर के दूसरे नाजुक भागों से उन्हें पकड़ने के लिये आप जिमनास्टिक करतब करने लगेंगे । व्यायाम होगा और जिस्म में इतना लोच आयेगा कि चोली में पीठ पर बटन लगाने में किसी और की मदद नहीं लेनी पड़ेगी ।
कुत्ता होगा तो किसी न किसी को काटेगा ही । तूतू-मैंमैं होगी, लड़ाई की प्रैक्टिस हो जायेगी । कोर्ट तक बात पहुँची तो मुकदमे बाजी का ही तजुर्बा होगा जो बाद में मकान मालिक से झगड़ा होने पर काम आयेगा ।
कुत्ता आपकी क्यारियों में सब्जियां व फूल खोद-खोद कर उगने नहीं देगा । अपनी फुलवारी का हाल देख रोज आपको सिर पकड़ना पड़ेगा । आगे चल कर आपका लड़का कार चुराता या बैंक लूटता पकड़ा जाये या लड़की प्रेमी के साथ भाग जाये तो सिर पकड़ कर बैठने में आसानी होगी । इसका आपको काफी अभ्यास हो चुका होगा ।
कुत्ते जूते, चप्पल व जुराबें चबाते रहते हैं, उन्हें ढूंढ़ना पड़ेगा । इससे ढूंढ़ने की ऐसी प्रैक्टिस हो जायेगी कि किसी दिन आप डिटेक्टिव बन सकते हैं ।
कुत्ते के डर के मारे पड़ौसी आपके घर नहीं आयेंगे।आपको जासूसी नावल तथा फिल्मी मैग-जीनें पढ़ अपना जनरल नॉलिज बढ़ाने का मौका मिलेगा ।
मौसमी चटर्जी ने संजीव कुमार का कान काट कर अपने पर्स में रखा ! अच्छा ?
फिल्मी कीचड़
कुत्ता आपको भावनात्मक स्थिरता देगा । आप किसी लड़की को छेड़ते पकड़े जाने पर काला मुँह करके गधे की सवारी करने के बाद भी घर आयेंगे तो कुत्ता पहले जैसे ही प्रेम व आदर से आपका स्वागत करेगा ।

क्यों और कैसे

प्र. : विपत्ति के समय हमारे रोंगटे क्यों खड़े हो जाते हैं ?

उ. : शरीर के भीतर छिपी ग्रन्थियों के कारण हमारे शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, । यह ग्रन्थियां शरीर के भीतर की अन्य ग्रन्थी समूह से जुड़ी हैं, जिनमें से हर शरीर के रक्त के लिये मिल रसायन उत्पन्न करती हैं और रक्त में मिश्रित हो यह रसायन शरीर के भिन्न कार्यो का नियन्त्रण करते हैं। यह विशेष ग्रन्थियाँ गुर्दो के पास होती हैं इन्हें अड्रेनलीन ग्लेंड या ग्रन्थी कहते हैं यह रसायन अड्रेनलीन उत्पन्न करते हैं । इस रसायन का मुख्य कार्य शरीर को किसी भी विशेष शारीरिक प्रयास के लिये तैयार करना है । उदाहरण के लिये, जैसे लड़ाई करने के लिये तैयार-अड्रेनलीन शत्रु से लड़ने के लिये दो कार्य करता है, शत्रु को डराने के लिये शरीर के बाल खड़े कर देता है और आँखों की पुतलियों को फैला देता है, जिनसे शरीर डरावना दिखाई देने लगता है। हालांकि इन्हें केवल बाहरी सज्जा कहा जा सकता है।

अड्रेनलीन के और भी बहुत से प्रभाव हैं जो दक्षता बढाने में सहायक होते हैं। यह हृदय की माँस पेशियों को तेज़ कर देता है, । जिससे आकसीजन की मात्रा शरीर में बढ़ जाती है, साथ ही यह शरीर का रक्त संचार भी बढ़ा देता है। यह शरीर के भीतर हो रही पाचन क्रिया को आहिस्ता कर देता है क्योंकि आपत्ति के समय यह कार्य शरीर की शक्ति का फिज़ूल खर्च है । और अन्त में शरीर की पसीने. की ग्रन्थियों को कार्य रत कर देता है । बाद के यह सारे कार्य ही किसी भी प्रकार के विशेष प्रयास में अत्यन्त सहायक होते हैं ।इस लिये कहा जा सकता है अड्रेनलीन खिलाड़ियों का अच्छा मित्र है ।

इराका यह अर्थ बिलकुल नहीं है कि किसी विषेश प्रतियोगिता से पहले अतिरिक्त अड्रेनलीन का सेवन करना चाहिये । शरीर के अड्रेनलीन ग्लेंडस शरीर की आवश्यकता अनुसार अड्रेनलीन उत्पन्न कर देते हैं। आवश्यक मात्रा का निरधारण शरीर के विकस के साथ ही हो जाता है

प्र. : क्या अन्य जीवों की आँखे मनुष्य से भिन्न होती हैं ?

उ. : हालांकि पशु भी मनुष्यों के समान ही संसार-की वस्तुओं को देखते प्रतीत होते हैं फिर भी उनका जीवन का दृष्टिकोंण मनुष्य से बिलकुल भिन्न होता है। उनकी दृष्टि अक्सर सूंघने और सुनने की शक्ति से इतनी अधिक सहायता पाती है कि कभी-कभी तो दृष्टि का महत्व ही बहुत घट जाता है ।

खुले मैदानों में ऊदबिलाव का शिकार करने वाले कुत्ते उसे देखने में असफल हो सकते हैं परन्तु उसके शरीर की गंध कुत्तों को उस तक पहुंचा देती है । इसमें भी ग्रेहाउंड जाति के कुत्ते दूसरों से भिन्न होते हैं वे शिकार गंध तथा दृष्टि के आधार पर करते हैं ।

खरगोश या दूसरे जानवरो में दृष्टि का बड़ा महत्व है। खतरे का आभास पाते ही खरगोश की सबसे पहली प्रतिक्रिया है अपने कान नीचे कर शरीर पर गिरा दुबक कर छुप जाना जबकि उसकी आँखें बहुत अधिक फैल जाती हैं। इस प्रकार उनके देखने का क्षेत्र उसका पूरा शरीर हो जाता है यदि अब भी खरगोश को शत्रु का शक होता है तो वह अपने कान खड़े कर आहट सुनता है ।

पक्षियों की आँखें भी उनके जीवन के लिये भिन्न-भिन्न प्रकार से बनी होती हैं। आकाश में उड़ती चील अपने परों को फड़फड़ाती हुई आकाश में विचरती है परन्तु अपनी टेलीस्कोप जैसी आंखों से पृथ्वी पर धूमते अपने शिकार की टोह में रहती है । खेतों में घूमते चूहे यहाँ तक कि घास का बीटल भी उसे दिखाई दे जाता है । फिर वह बिजली की सी तेजी से पृथ्वी की ओर झपटती है। इस समय इसकी आँखें साधारण रूप धारण कर लेती हैं और फिर माईक्रोस्कोपिक दृष्टि की बन जाती हैं।

इसके विपरीत हमें बहुत सी ऐसी चिड़ियां भी मिलती हैं जो रोज साधारण सड़कों पर मोटर इत्यादि से टकरा कर मर जाती हैं यह पक्षी अपनी एक तरफा दृष्टि से दूर से आती चीज़ की गति तथा दूरी का अन्दाजा नहीं लगा पाते ।

उल्लू की दृष्टि सामने होती है परन्तु उसका शिकार करने वाले गिद्ध और बाजों की गति का अनुमान वह बखूबी लगा लेता है ।

प्र. : फोटोग्राफी का आविष्कार किसने किया और कब किया ?

शाहबाज खाँ—मुजफ्फर नगर

उ.: फोटोग्राफी ग्यारहवीं और सौलहवी शताब्दी के बीच बिनालैंस के कैमरे द्वारा की जाती थी । यह किसी एक मनुष्य के परिश्रम से नहीं आविष्कृत हुई बल्कि इसका श्रेय अनेक लोगों के लगातार परिश्रम का फल है ।

सन् 1568 ई० में डेनियेलो बराबरो ने कैमरे में पहली बार लैन्स लगाया था। फिर 1802 ई० में थौमस बेजवुड और सर हमपरी डेवी ने 'कागज पर कच्ची तस्बीरें छापीं। सन् 1816 ई० जोज्फ निपसी ने गहनों के डिब्बे को लेकर कैमरा तथा माइक्रोस्कोप के लैन्स से पहली बार नैगेटिव बनाया। इन सब की मेहनत के फलस्वरूप 1835 ई० में विलियम पेलबोट ने पहला पौजिटिब (Posiitve)या पहली पक्की तस्वीर बनाई ।

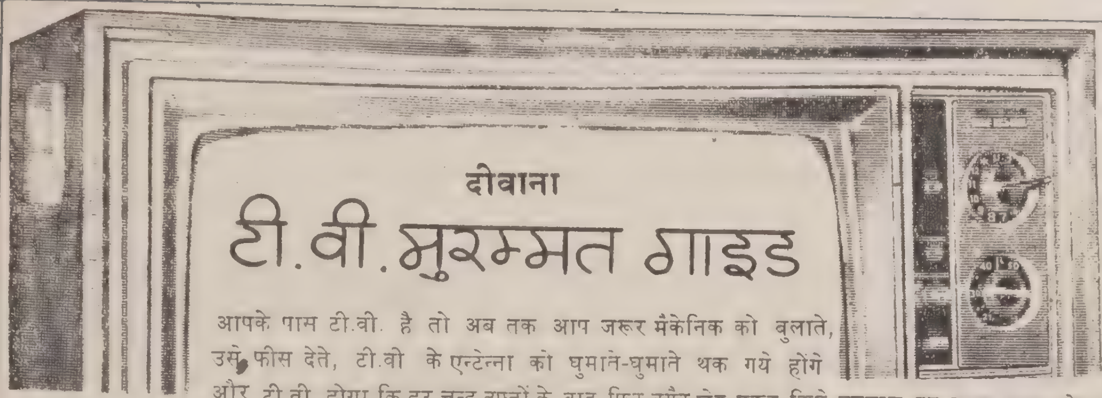
सन 1888 ई० में सर्वप्रथम बोक्स कैमरा जो कि कोडक सिस्टम द्वारा चालित था जिसे ईस्टमैन ड्राईप्लेट एण्ड फिल्म कम्पनी ने बाजार मे लाकर बेचा और तहलका मचा दिया ।

आज हम देखते हैं कि हजारों प्रकार के कैमरे बाजार में मिलते हैं जिनमें से कई ऐसे हैं जिनके द्वारा तस्वीर बन जाती है ।

प्र० क्या मनुष्य पतंग की तरह उड़ सकता है ?

नवल बहादुर सिंह—बरखेड़ा, गोपाल,

उ०: हम कह सकते है कि मनुष्य पतंग की तरह नहीं बल्कि पतंग के सहारे उड़ सकता है और ऐसी पतंग को हैंग ग्लाइडर कहते हैं। अमरीका में तो इसे खेल के लिये प्रयोग में लाते है। भारत में भी ऐसा हैंग ग्लाइडर दो वर्ष पूर्व बन चुका है ।

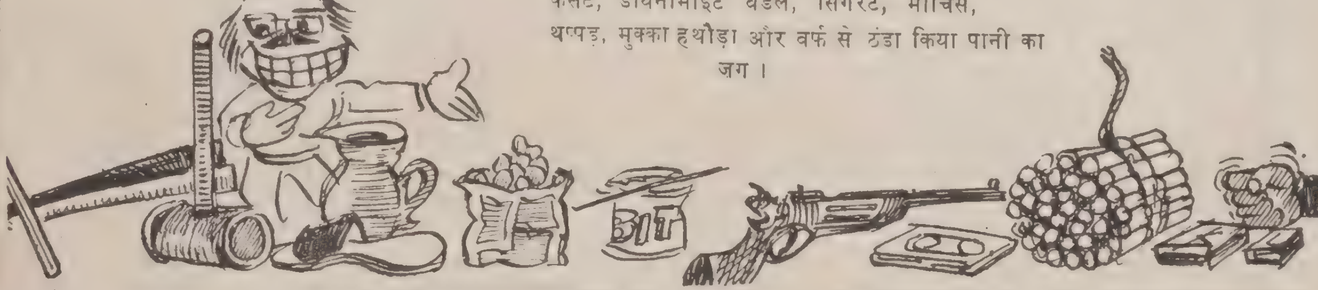


दीवाना

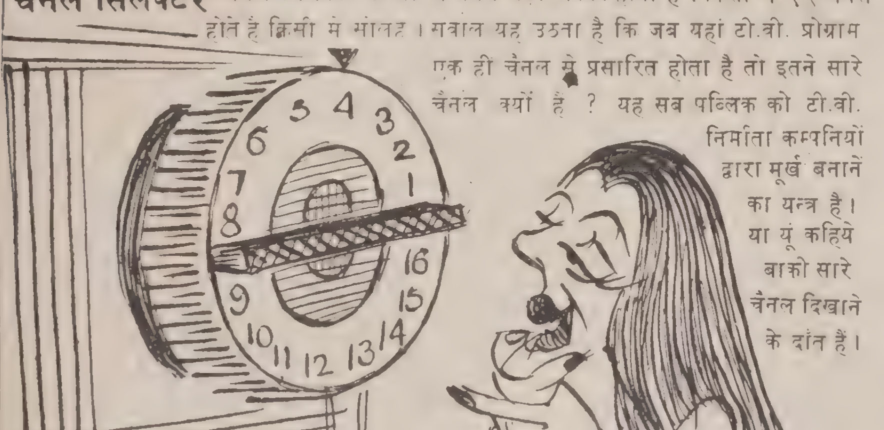
टी.वी. मुरम्मत गाइड

आपके पास टी.वी. है तो अब तक आप जरूर मैकेनिक को बुलाते, उसे फीस देते, टी.वी के एन्टेन्ना को घुमाते-घुमाते थक गये होंगे और टी.वी. होगा कि हर चन्द हफ्तों के बाद फिर बगैर खेद प्रकट किये हड़ताल पर चला जाता होगा। अब आप टी.वी. सैट को देखते होंगे तो दिमाग में ख्याल आता होगा कि यह किस जन्म का दुश्मन आप अपने घर ले आये । अब आपको चिन्ता की धूप में अपने बालों को और पकाने की जरुरत नहीं । आपकी लड़की यह कह कर······ कि हमारा टी.वी. तो खराब है पड़ौस की आंटी के घर देखने नहीं जा पायेगी । आपके दिल में आशंकाओं का ज्वार-भाटा उठता होगा कि पता नहीं चित्रहार ही देख रही होगी या चित्रहार के दृश्यों की खुद रिहर्सल कर रही होगी ।

हमारी टी.वी. मुरम्मत की पद्धति क्रांतिकारी है। हमारी पद्धति से बेवकूफ से बेवकूफ आदमी, बच्चा से बच्चा और बूढ़ा से बूढ़ा व्यक्ति और जिसका इलैक्ट्रॉनिक्स का ज्ञान फ्यूज हुये बल्ब को बदलने तक ही सीमित है, भी टी.वी. की अच्छी तरह से मुरम्मत कर सकता है । आपको पेचकस तक खरीदने की जरूरत नहीं । हमारे गाइड की मदद से बाहर-बाहर से ही रिपेयरिंग हो जाती है । टी.वी. सैट खोल कर अन्दर झांक कर देखने की भी जरूरत नहीं । हमारे खोजे तरीकों में रिपेयरिंग के काम आने वाले उपकरण आपके पास शायद पहले ही होंगे । रिपेयर टूल्सः—डंडा, चिमटा मूंगफलियों का पैकिट, गुलेल या शॉटगन, डिस्को कैसेट, डायनामाइट बंडल, सिगरेट, माचिस, थप्पड़, मुक्का हथौड़ा और बर्फ से ठंडा किया पानी का जग ।



चैंनल सिलेक्टर चैनल सिलेक्टर टी.वी. में सबसे बड़ा चक्का होता है । किसी में १२ चैनल होते हैं किसी में सोलह । सवाल यह उठता है कि जब यहां टी.वी. प्रोग्राम एक ही चैनल से प्रसारित होता है तो इतने सारे चैनल क्यों हैं ? यह सब पब्लिक को टी.वी. निर्माता कम्पनियों द्वारा मूर्ख बनानें का यन्त्र है। या यूं कहिये बाकी सारे चैनल दिखाने के दांत हैं।

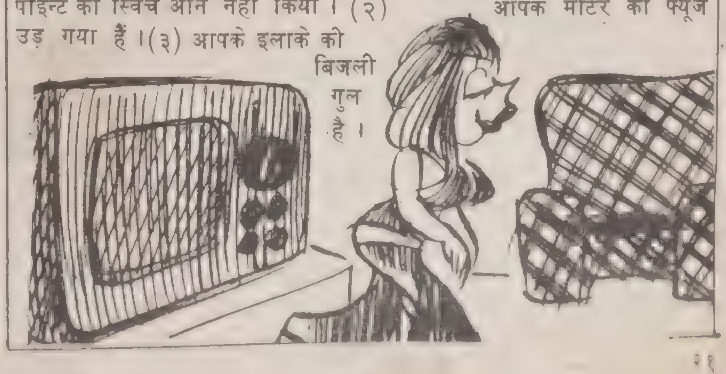


इसे यूं भी समझाया जा सकता है किसी लड़की से आपका रिश्ता तय हुआ--आपको पता लगा कि उसकी ग्यारह बहनें हैं आपके दिल में फुल-झड़ियां फूटने लगीं । ग्यारह सालियां ! बेटा घोंचू मल तुम्हारे मजे आ गये । कृष्ण कन्हैया बने फिरोगे । शादी के बाद पता लगे कि बाकी ग्यारह बहनें तो भारत-पाक बंटवारे के समय लाहौर में ही छूट गयी थीं। बाद में सुना गया था कि उनसे धर्म परिवर्तन करा वहीं शादी करा दी गयी । उनसे मुलाकात होने की उम्मीद न के बराबर है । वही हाल मल्टी चैनल टी.वी खरीदने के बाद होता है । यह तो हुआ चैनल सिलेक्टर का परिचय ।

कभी-कभी आपने देखा होगा कि टी.वी. की आवाज खराब हो जाती है । घर्रर्रर्र की आवाज आती है । चैनल सिलेक्टर का नीचे वाला चक्का घुमाइये, आवाज ठीक हो जायेगी । अगर ठीक न हुयी तो समझिये यह घर्रर्रर्र की आवाज टी.वी. से नहीं आपके पिता जी से आ रही है जो कार्यक्रम देखते-देखते सो गये हैं । उन्हें जगाइये ।



कभी-कभी आप टी.वी. ऑन कर देते हैं काफी देर प्रतीक्षा के बाद भी न साउन्ड आता है और न ही पिक्चर । स्क्रीन पर हल्की-सी सफेदी भी नहीं आती । सारे नौबों को घुमा कर फुल कर दें । इससे भी कुछ न हो तो तीन बातें हो सकती हैं :–(१) आपने टी.वी. तो आन कर दिया लेकिन बिजली के पाइन्ट का स्विच ऑन नहीं किया । (२) आपके मीटर का फ्यूज उड़ गया हैं ।(३) आपके इलाके की बिजली गुल है ।

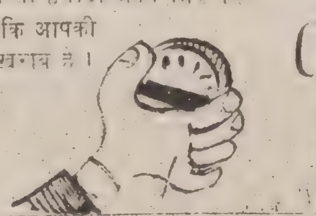


पिक्चर में टेढ़े मेढ़े पैटर्नों का आना



कभी-कभी पिक्चर पर अजीब-अजीब तरह के डिजायन आने लगते हैं। लगता है जैसे पॉप आर्ट के नमूने आ रहे हों। इन बदलते डिजायनों को गौर से देखो, शायद इनमें से कोई ऐसा डिजायन नजर आये जिस डिजायन का आप सर्दियों के लिये सूट बनवाना चाहें या स्वेटर का नया डिजायन नजर आ जाये। अब चैनल सिलेक्टर का नीचे वाला चक्का घुमाकर देखें -(क) इससे भी पिक्चर साफ न आये तो टीवी के ऊपर से हल्के हल्के मुक्के मार कर देखें (ख) यह तरकीब भी काम न आयी तो हथौड़े से साउंड में दिल ही दिल में गाली देते हुए चोट करें। (ग) फिर भी काम न बना तो हथौड़ा अपने सिर पर मारिये क्योंकि आपकी किस्मत ही खराब है।

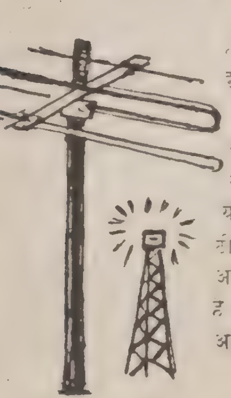


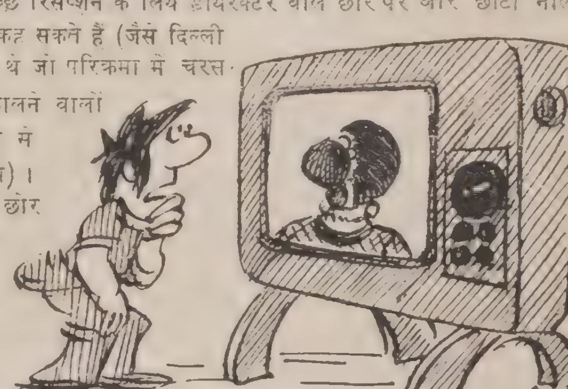






ऐन्टेन्ना ऐन्टेन्ना टीवी का एक बहुत महत्वपूर्ण अंग है। इसमें तीन छड़ें होती हैं एक बीच में मुड़ी हुयी नली जिसे डाइपोल कहते हैं इसी में टीवी को जोड़ने वाली तारें लगी होती हैं। एक ओर लम्बी और सीधी नली रिफ्लेक्टर होती है और दूसरे छोर पर डायरेक्टर नामक छोटी नली। अच्छे रिसेप्शन के लिये डायरेक्टर वाले छोर पर और छोटी नलियां हो सकती हैं जिन्हें आप एडीशनल डायरेक्टर जनरल कह सकते हैं (जैसे दिल्ली दूरदर्शन पर कमलेश्वर जो एडीशनल डायरेक्टर जनरल थे जो परिक्रमा में चरस पीने वालों, कबूतर उड़ाने वालों और कान की मैल निकालने वालों के इंटरव्यू लेते थे। बाद में ब्रह्मचारी जी के डाइपोल से तालमेल न बिठा पाने के कारण ऐन्टेन्ना से उतर गये थे)। यह ध्यान रखना चाहिये कि ऐन्टेन्ना का डायरेक्टर वाला छोर टीवी स्टेशन के ट्रांसमिशन टावर की ओर होना चाहिये। अगर ऐन्टेन्ना की स्थिति इससे उल्टी हुयी तो हो सकता है जब ज्योत्सना जी छः बजे शाम को नमस्ते कहने और आज के मुख्य कार्यक्रमों के बारे में बताने आईं तो स्क्रीन पर उनके मुखमंडल की जगह पीठ हो।

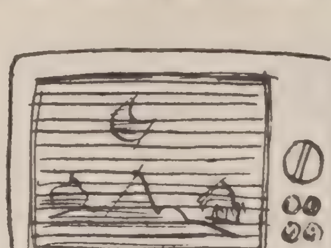


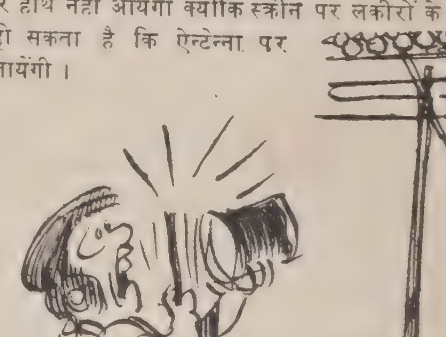


स्क्रीन पर नीचे से ऊपर या ऊपर से नीचे चलती लायनों का आना

लगातार ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर चलती पतली-पतली काली या सफेद स्क्रीन पर कभी लायनें आती हैं। ऐसी स्थिति में क्या करें? (१) अपने सलवार कमीज़ के साथ लाल दुपट्टा पहन रखा है तो फौरन बालकनी पर जायें व अपने प्रेमी के घर की तरफ मुंह कर "हवा में उड़ता जाये मेरा लाल दुपट्टा मलमल का" गाना गायें। ऐसा मौका फिर हाथ नहीं आयेगा क्योंकि स्क्रीन पर लकीरों के आने का अर्थ है हवा चल रही है और ऐन्टेन्ना ढीला होने की वजह से हिल रहा है (२) यह भी हो सकता है कि ऐन्टेन्ना पर चिड़िया आकर बैठी हैं ऐसी स्थिति में खाली टीन का डिब्बा डंडे से बजायें चिड़ियां उड़ जायेंगी।







स्क्रीन पर लकीरों के साथ सफेद नक्ते भी आ रहे हैं



तो इसका अर्थ हुआ ऐन्टेन्ना पर कव्वा बीट कर रहा है। यहां गलेल या शाटगन का प्रयोग करें।



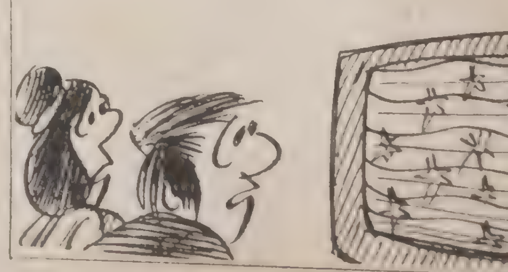


अगर लकीरें मोटी-मोटी चल रही हैं तथा बीच-बीच में फ्लैश आ रहे हैं तो इसका कारण यह हो सकता है कि बंदर छत पर ऐन्टेन्ना के पोल को पकड़ कर जोर-जोर से हिला रहा है। आप मूंगफलियों का पैकेट छत पर फेंक दें। बंदर पोल को छोड़ कर मूंगफलियां चुनने लगेगा व पिक्चर ठीक हो जायेगी।



पिक्चर के बीच में तारे आना

कभी-कभी पिक्चर में अचानक काले-काले धब्बे या चमकदार तारे से फूटने लगते हैं। इस खराबी को दूर करने की विधि भी बहुत सरल है...




आप डाइनामाइट स्टिक्स का बंडल लेकर छत पर जायें और चारों ओर गौर से देखें। किसी एक ओर आपको चिमनी से धुआं उठता दिखाई देगा या छुक-छुक की आवाज सुनाई देगी। उस ओर निशाना साध प्लीते में आग लगा कर फेंकें टी.वी. पिक्चर साफ हो जायेगी।
इस तरह की डिस्टर्बेन्स केवल आपके घर के पास कोई फैक्ट्री या कारखाना होने से ही होती है। उसे आपने बम फेंक कर उड़ा ही दिया है। अब जाकर आराम से टी.वी. कार्यक्रम देखें। कार्यक्रम समाप्त होते ही अपनी घड़ी व बटुआ बीवी को पकड़ा दें व पुराने कपड़े पहन लें, पुलिस वाले आपको पकड़ने आते ही होंगे। ना जाने बाद में घड़ी व बटुवा वापिस भी करें या नहीं।
BOOM
स्क्रीन पर डबल इमेज आना कभी-कभी स्क्रीन पर डबल इमेज आने लगते हैं अर्थात् एक के दो नजर आते हैं। इसे गोस्ट आना कहा जाता है तकनीकी भाषा में। जब क्रिकेट मैच वगैरह रिले हो रहे होते हैं तब भी शरीर के बाहरी रेखा के साथ चमकदार छाया सी नजर आती है। यह सब एक ही खराबी के कारण होते हैं। पिक्चर हिलती हुयी भी नजर आ सकती है जैसे पानी में लहरें चल रही हों। ऐसी दशा में टी.वी. सैट को इधर-उधर सरका कर उसकी स्थिति घुमा बदल कर देखें। शायद खराबी दूर हो।
अगर खराबी दूर नहीं होती तो बर्फ के ठंडे पानी का जग अपने सिर पर उडेल दें। क्योंकि आप बहुत पी गये हैं। अभी तो इमेज डबल नज़र आ रहे हैं कुछ देर बाद चार-चार नज़र आयेंगे।
पिक्चर का भागना प्रायः टी.वी. पर पिक्चर ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर भागने लगती हैं। कभी पूरी पिक्चर भागती है या कटे हुये हिस्सों में। ऐसे में वर्टीकल होल्ड वाला नॉब घुमा कर देखें। ठीक हो जायें तो अच्छा है और ठीक न हो तो उससे भी ज्यादा अच्छा...
ठीक न हो तो ब्राइटनैस वाला नॉब घुमा कर जीरो पर लायें। कन्ट्रास्ट फुल कर दें, टी.वी. स्क्रीन के आगे रंग-बिरंगे पतंगों के कागज लटकायें या चिपकायें। फिर कमरे की सारी बत्तियां बंद कर फास्ट बीट वाला डिस्को नम्बर लगा कर डाँस करें। रंग-बिरंगी झपझपाती रोशनी डिस्कोथेक का सा समां बांध देगी। और टी.वी. का असली मजा आयेगा।
हमारे उपरोक्त हथकंडों के बाद भी आपके टी.वी. में खराबी रह जाती है तो उसे ठीक करवाने में पैसे बर्बाद न करें। समझ लें टी.वी. मर गया है। उस पर कफन डाल दें। शोक मनायें, धूमधाम से अर्थी निकालने का प्रबन्ध करें। हो सके तो पोस्टर छपवा कर लोगों से जनाजे में शामिल होने की प्रार्थना करें।
इसकी सूचना आप टी.वी. निर्माता कम्पनी को भी दें। इसका असर बिजली की तरह होगा। टी.वी. कम्पनी का जनरल मैनेजर दौड़ा-दौड़ा आपके पास ब्रांड न्यू टी.वी. सैट लेकर आयेगा और कहेगा, "चाचा, क्या हमारा भट्ठा बिठाने पर तुला है। इतनी खराब पब्लिसिटी से हमारी कम्पनी के बनाये टी.वी. सैटों की मार्केट ही खत्म हो जायेगी। हमारी कम्पनी की तरफ से यह नया सैट तोहफे के रूप में स्वीकार करें और अर्थी न निकालें।" इस तरह आपको नया सैट मिले तो दीवाना सम्पादकीय विभाग को देशी घी के बने पिस्ते, बादाम, बर्फी भेजना न भूलें।
ओ३म् इतिश्री।

खेल खेल में

फुटबाल कप विश्व

इस वर्ष फुटबाल कप के फाइनल दौर में भाग लेने वाले देशों का पिछले विश्व कपों में रिकार्ड ।

देश	कुल बार अंतिम दौर में	मैच खेले	जीते	ड्रा.	हारे	गोल किए	गोल खाये
ब्राजील	11	52	33	10	9	119	56
पं. जर्मनी	9	47	28	9	10	110	68
इटली	9	36	20	6	10	62	40
अर्जन्टीना	7	29	14	5	10	55	43
हंगरी	7	26	13	2	11	73	42
फ्रांस	7	20	8	1	11	43	38
इंगलैंड	6	24	10	6	8	34	28
यूगोस्लोवाकिया	6	25	10	5	10	45	34
चैकोस्लोवाकिया	6	22	8	3	11	32	36
चायल	5	18	7	3	8	23	24
स्पेन	5	18	7	3	6	22	25
बेल्जियम	5	9	1	1	7	12	25
रुस	4	19	10	3	6	30	21
आस्ट्रिया	4	18	9	1	8	33	36
स्कॉट लैंड	4	11	2	4	5	12	21
पोलैंड	3	14	9	1	4	27	17
पेरु	3	12	7	1	7	17	25
उ. आयरलैंड	1	5	2	1	2	6	10
एलसल्वाडोर	1	3	0	0	3	0	9
हन्डूरास	0	0	0	0	0	0	0
कैमेरुन	0	0	0	0	0	0	0
अल्जीरिया	0	0	0	0	0	0	0
कुवैत	0	0	0	0	0	0	0
न्यूजीलैंड	0	0	0	0	0	0	0

हाकी चैम्पियनस कप १९८२

एमस्टरडम में जून 1982 में आयोजित हुए विश्व के शीर्षस्थ छः हॉकी देशों के मुकाबले में विभिन्न देशों की स्थिति निम्न प्रकार से रही । सबसे अप्रत्याशित परिणाम पाकिस्तान की टीम का भारत व हॉलेंड से हारना रहा । अन्तिम मैचों में हॉलेंड ने पाकिस्तान को व आस्ट्रेलिया ने भारत को 7-2 के विशाल अन्तरों से हराया ।

1. हॉलैंड
2. आस्ट्रेलिया
3. भारत
4. पाकिस्तान
5. जर्मनी
6. रुस



मानें या ना मानें

टोकियो के जिन्किची आउची 8 वर्ष के अवकाश प्राप्त पुलिसमैन हैं वे प्रतिदिन प्रातः चार बजे से उठक दो घंटे कानून की पुस्तकों का अध्यय करते हैं । उन्होंने जापान की कानू परीक्षा पास करने का पक्का इरादा क रखा है । यह परीक्षा वे पहले 2 मरतबा दे चुके हैं । बाद में वे वकी बनेंगे और अपने मुवक्किलों से कोई फी नहीं लेंगे । उन्होंने यह परीक्षा पहल बार 62 वर्ष की आयु में दी थी ।

●

टर्की में पेसिलके गाँव में मुस्तफ बेस्याल के नाम से आया हर पत्र गाँव के चौक में जोर जोर से पढ़कर सुनाय जाता है । कितनी बुरी बात है। परन्तु उस गाँव में उसी नाम के 82 आदमी हैं । टेलीफोन काल की समस्या अभी तक हल नहीं हो पाई है । गाँव के 342 आदमियों में से 24 का नाम अली बेस्याल है । सारे मुस्तफा और अली लाईन में खड़े होकर फोन करने वाले से बातकर पता लगाते हैं कि फोन उनके लिए है क्या ।

●

पैराटूपर भरती करने के अपने अभियान के दौरान फ्रांस की सेना ने पेरिस की एक सबसे भीड़ भाड़ वाली सड़क पर एक पोस्टर लगाया । जिसमें लिखा था जवानो ! फ्रांस के पैराटूपर सेना में भरंती होइये । पैराशूट से कूदने से अधिक खतरनाक तो इस सड़क को पार करना है ।

किसी ने पोस्टर के नीचे लिख दिया : मैं खुशी से भरती होता, परन्त भरती करने का दफ्तर सड़क के उस पार है ।

●


सिलबिल पिलपिल टू-इन-वन
आज सिलबिल कहां गया है ? सुबह से ही नजर नहीं आया ।
वह सुबह उठकर कहीं चला गया । रात भर सपने में बड़बड़ाता रहा था । मैं तो उसकी यह बदली हालत कई दिनों से देख रहा हूं । जब से उस साल की फसल के पैसे उसके पास आये हैं गहरी स्कीम में डूबा रहता है ।
क्या स्कीम बना रहा होगा ? हमें तो बताया नहीं ।
वह देखो सिलबिल आ रहा है । उसने सिर पर बड़ा सा पैकेट उठा रखा है । लगता है इसमें नाजुक चीज है । क्योंकि यह ऐसे कदम उठा रहा है जैसे आठवें महीनेमें औरतें उठाती हैं । चेहरे पर ऐसी ही प्रकाश की छाया है जैसे भगवान बुद्ध के चेहरे पर थी जब उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था ।
ठहरो, मुझसे जरा दूर ही रहना ! मुझे हाथ लगाने की कोशिश न करना और न ही यह पैकेट सिर पर से उतारने में मुझे किसी की मदद चाहिये । मैं खुद ही उतार लूंगा । लापरवाही से हाथ लगाने पर टूट-फूट हो सकती है । मुझे कोई चुटकुले भी नहीं सुनाना । कहीं हंस कर इसे गिरा न दूं ।
क्या हो सकता है इसमें ? हाथी दांत की बनी नाजुक कला कृति है ?
कोई शीशे का कीमती समान होगा इसमें ।
यह देखो असली जापान का बना इस्टीरियो टू-इन-वन खरीद कर लाया हूं । पूरे चार हजार रुपये लगे हैं मेरे इसमें । कई दिनों से गहराई सोच समझ कर मैंने इसको खरीदा है । इसका डायल कितना चमकदार है जैसे शीशा हो । दो स्पीकर जैसे नीले आसमान में पूर्णमासी के दो-दो काले चांद हों और इसके बटन देखो कैसे प्यारे-प्यारे मुर्गी के चूजे जैसे हैं ।
(यह काम अकलमंदी का किया इसने)


याह मैन याह !
अब हम मार्कीट जाकर ढेर सारे डिस्को कैसेट ले आयेंगे और खूब नाचेंगे। दिन और रात नाचते रहेंगे। स्टीरियो म्यूजिक पर नाचने का मजा ही कुछ और है। हमारे जूते ही तो घिसेंगे और क्या होगा, सिलबिल ने यह काम बढ़िया किया है।
WHERE
LAID
EGG
खबरदार जो ऐसी बात दोबारा मुँह से निकाली। कहते हैं कि इसको बजायेंगे और दिन रात नाचते रहेंगे। तुमको बजाने कौन देगा ? अगर जो इतना कीमती टू-इन-वन खराब हो गया तो कौन जिम्मेदार होगा ? और मैले हाथ लगाने से यह मैला भी तो होगा।
मैं किसी को इसे हाथ लगाने नही दूगा। चौबीस घंटे इसके चारों तरफ मशीनगन लेकर पहरा दूंगा। जो इसको छेड़ने की नापाक कोशिश करेगा उसे गोलियों से भून कर ढेर कर दूंगा। तुम मुझे बेवकूफ न समझना।
तू इसको बजायेगा नहीं तो और इसका करेगा क्या ? क्या शहद लगा कर चाटेगा। तेरी खोपड़ी में इतनी सीधी सी बात क्यों नहीं घुसती। टू-इन-वन बजाने के लिये होता है और इसको लेकर तेरी क्या करने की सलाह है ?
सुरक्षित स्थान
मैं शीशे का सो केस बनाकर उसमें रखूगा। इतनी अच्छी चीज और नयी चीज को बजा कर खराब करना है। जब गाम में रिश्तेदार आयेंगे तो उनको दिखाऊंगा।
WAR ZONE
अब क्या किया जाये ? घर में इम्पोर्टेड टू-इन-वन है और बज नही रहा है पड़ा धूल फांक रहा है ?
अब मूर्ख आदमी को समझाओगे भी तो कैसे। जो बात इसके दिमाग में घुस जाये वह सीमेंट की तरह जम जाती है। मुझे पाइप पीने दो कुछ तरकीब सूझ जायेगी।
ऐह लोग देखो दूसरों की चीजों को किस तरह बर्बाद करने पर तुले होते हैं। अपने आदमी भी अपनो की अच्छी चीजें ले डालते हैं। भाई जी मेहरबानी करके ये पाइप बुझा दो। मेरा टू-इन-वन खराब हो जायगा।



सिलबिल-पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये ।



पुरेश खुराना 'पप्पी'—जीन्द : खूबसूरत लड़कियां अपने आप को खुदा क्यों समझती हैं ?

उ. : वह स्वयं को खुदा की पब्लिसिटी डिपार्टमैंट की आनरेरी मॉडल समझती हैं।

अशोक जौहर 'गगन'—देहरादून : गरीब चन्द जी, उस वक्त मुझे बड़ा तरस आता है जब मेरा लड़का आप को इत्तफाक से पकड़ कर उल्टा लटका देता है।

उ. : यह भी अच्छा ही है कुछ तो आया ना आपको,हम सब यह समझें बैठे थे कि आप को कुछ भी नहीं आया होता।

मनोज ऑवलिय—उदयपुर (राज.) : गरीब अंकल, शादी वाले दिन दुल्हे को तलवार क्यों पकड़वाते हैं ?

उ. : क्योंकि तलवार पकड़ने का उसका अन्तिम अनुभव होता है। शादी के बाद तो उसके हाथ पांव कांपते रहते हैं।

रुचिका गुलाटी—तिलक नगर मार्किट : तृष्णा दुखों का मूल कारण है। यह जानते हुए भी इन्सान तृष्णा करता है, क्यों ?

उ. : तृष्णा न करे तो क्या करेगा ? बैठा 2 बोर होता रहेगा। तृष्णा द्वारा दुख पैदा कर उन्हें भोगने में टाइम कटता रहता है।

कु. शारदा चंदनाणी—अमरावती (महा.): ग़रीब चन्द जी, आप की रुचि किन-किन बातों में है।

उ. : बिल्ली से आटोग्राफ लेने के सिवा सारी बातों में रूचि है।

हिरदेश सचदेव 'बब्बी'—चन्दौसी : गरीब चन्द जी, मैंने अपनी प्यारी पत्रिका 'दीवाना' में अपना फोटो प्रकाशित करने के लिए भेजा, परन्तु अभी तक छपा नहीं, क्या कारण है ?

उ आप की फोटो अपनी बारी के इन्तजार में क्यू में खड़ी होगी। वास्तव में हमारे पास इतने फोटो छपने के लिए आते हैं कि हम सोच रहे हैं हिन्दुस्तान के फोटोग्राफरों की कमाई में हमें कमीशन की माँग करनी चाहिए।

प्रहलाद जसवानी कृष्ण कन्हैया—मंडला : प्र. : गरीब चन्द जी, इन्सान गरीब से अमीर कब बन जाता है।

उ. जब वह निन्यानवे के चक्कर में 'फिरकी की तरह चक्कर काटने लगता है।

विजय किशोर सिंह—(प. बंगाल) प्रावेलीया कोलीयरी : प्रेमिका का रूठना प्रेमी के लिए क्या माने रखता है ?

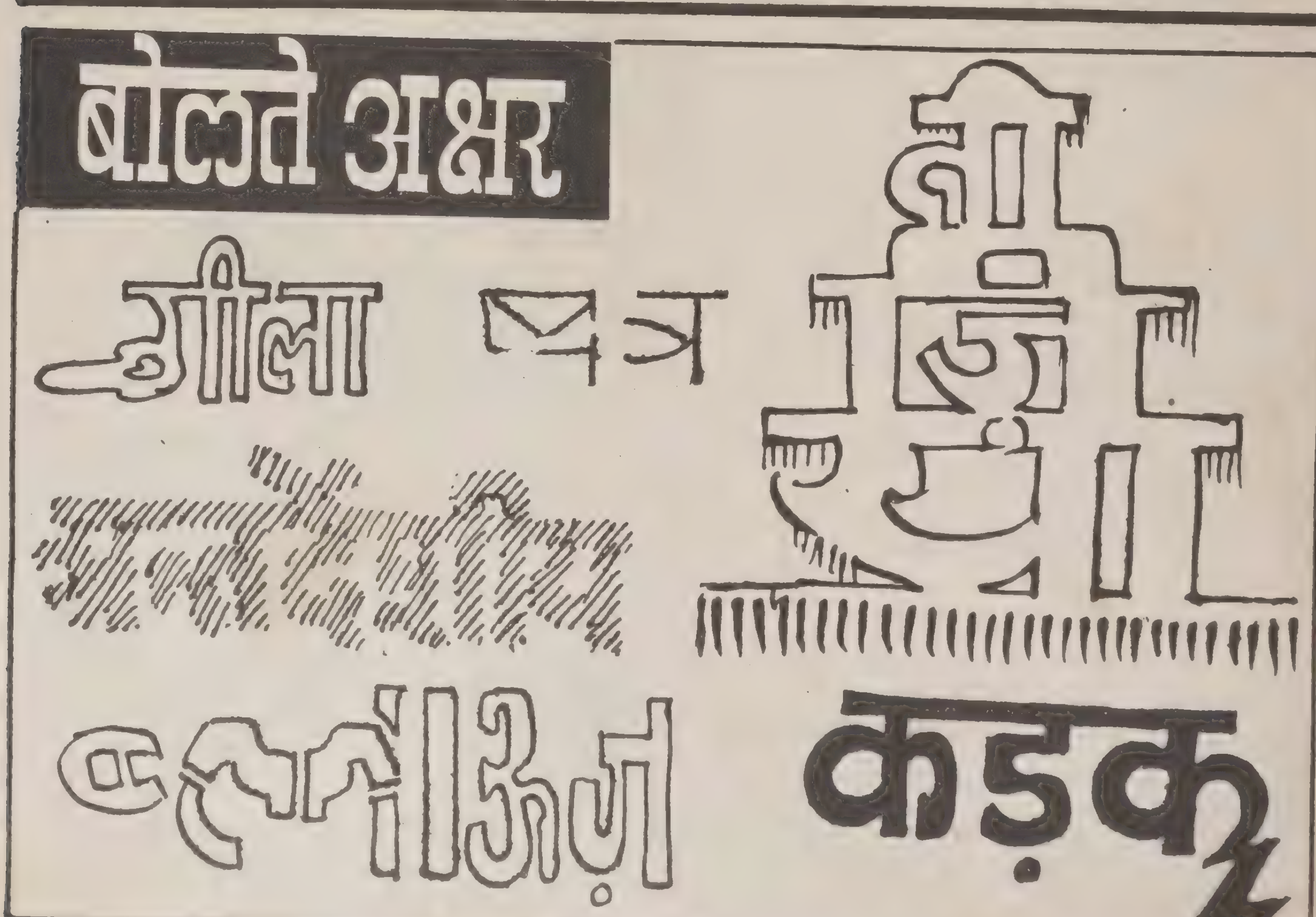
उ. : वही माने जो वोटरों का रूठना नेता के लिए रखता है।

संजय कुमार त्यागी—ढालीपुर देहरादून : डीयर गरीब चन्द जी आप के पिताजी पैदा करने के बाद पछताए तो नहीं थे।

उ.;नहीं !उस वक्त उन्हें पता ही नहीं था कि मैं बड़ा होकर दीवाना में पाठकों के पत्रों के उल्टे सीधे उत्तर दूंगा।

विनोद पुरी 'रंजू'—लुधियाना (पं.) : विवाहित औरतें अक्सर कुंआरे मर्दों से हंसी-मजाक क्यों करती हैं ?

उ. : विवाहित स्त्रियों की विन्डो शॉपिंग करने की आदत होती है।

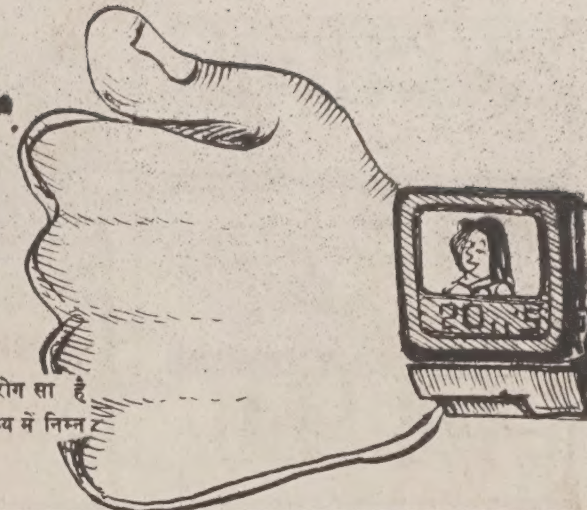


फैण्टम – गुमनाम कमाण्डर




घायल बाघ को और अधिक जान माल की हानि करने से पहले ही मार देना चाहिए।
ओ चलते-फिरते भूत, फिर क्या करना चाहिए।
मेरी बन्दूकें ऐसे पशु के लायक तेज नहीं हैं।
मुझे अपना सबसे तेज भाला दे दो।
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
यह मेरे दादा का भाला है, वह एक अत्यन्त बलवान मनुष्य थे।
इससे काम चल जायेगा।
आपका क्या इरादा है ?
मेरा इरादा बाघ को ढूंढ़कर मार देने का है।
अकेले। इस-भाले से !
हम सब आपके साथ चलेंगे।
नहीं…बहुत लोग मारे जायेंगे, मुझे अकेले ही शिकार करना चाहिए।
मुझे पशुओं के पद चिन्हों की पहिचान है, मुझे आपको दिखाने दीजिए।
उससे अवश्य लाभ होगा, चलो।
जंगली पशु की बाघ द्वारा हत्या परन्तु खाया न जाना—ताजी हत्या है रक्त गरम है।
!
यह राह जेबरा और हिरणों द्वारा पानी पीने जाने की राह है बाघ यहीं कहीं होगा।
ओह।
पक्षियों का एक समूह।
किसी चीज ने कुछ आगे इन्हें घबरा दिया है, बाघ भी हो सकता है।
जेबरा मारा है परन्तु खाया नहीं, वही बाघ।
अजीब बात है बाघ ऐसा नही करते।
यह अपने घाव के कारण पागल सा हो गया है।
वह जख्मी हुआ कैसे होगा।
हमें सब पता चल जायेगा यदि हम उसे ढूंढ़ लेंगे और वह पहले हमें ढूंढ़ न ले तो।
वह यहीं सोया होगा घास अभी भी मुड़ी हुई है।
पास ही होना चाहिए।

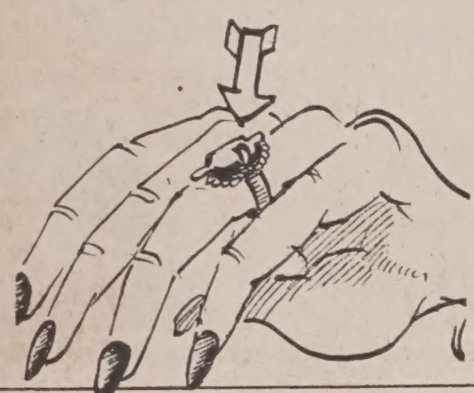
मिनी तमाशा



आपने हाल में ही समाचार पत्रों में पढ़ा होगा कि जापान नें रिस्ट वाच टी.वी. बनाई है। जिसमें कलाई घड़ी व मिनी टी. वी. है। समय के साथ ही कलाई पर टी. वी. प्रोग्राम देखो। मिनी चीजें बनानें का जापान को एक रोग सा है अगर इनको रोका नहीं गया तो भविष्य में निम्न मिनी चीजें लेकर आयेंगे।

रिंग बेलन

महिलाओं के लिये मिनी बेलन अंगूठी के होल्डर में नग की तरह फिट होगा।





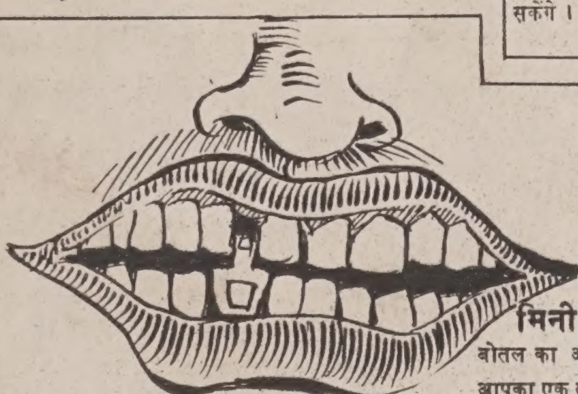
मिनी टिफिन

खाना ले जानें वाला मिनी टिफिन इतना छोटा कि आप पैन की तरह उसे बुशर्ट की जेब में लगा सकेंगे। (एस्ट्रोनॉट कैप्सूल तो इसमें समा ही जायेंगे)

मिनी छाता

अगर आपने ईयर रिंग के लिये कान में छेद करवा रखा है तो यह छाता उस छेद में लटकाया जा सकेगा।



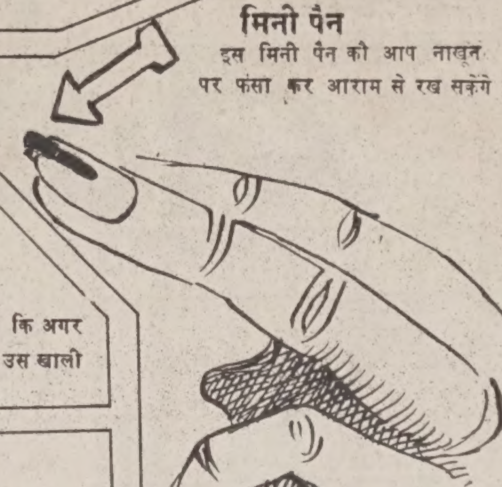


मिनी ह्विस्की बोतल

बोतल का आकार इतना मिनी होगा कि अगर आपका एक दांत टूट गया है तो बोतल उस खाली जगह में आ जायेगी।

मिनी पैन

इस मिनी पैन को आप नाखून पर फंसा कर आराम से रख सकेंगे।





मिनी पॉकेट चेयर

यह चेयर आपके पेंट की पिछली जेब में अटकने वाला होगा। आपकी कुर्सी छिनने का डर ही नहीं रहेगा।

मिनी पिस्तौल

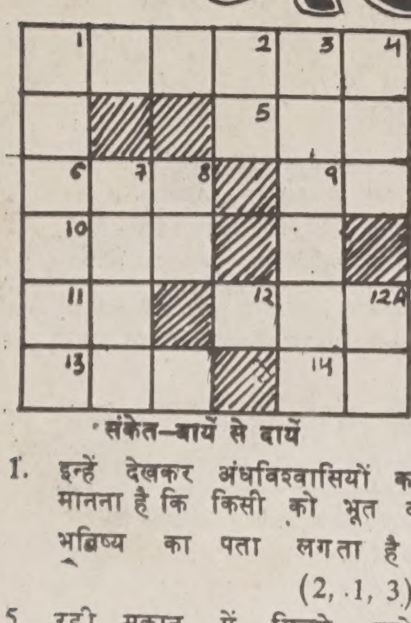
मिनी पिस्तौल इतना सूक्ष्म होगा कि आप बांह पर उसे बांध लें तो लगेगा जैसे आपने ताबीज बंधवा रखा है।



दीवाना लघु विज्ञापन

दीवाना वर्ग पहेली

10रु० इनाम जीतिये



संकेत—बायें से दायें

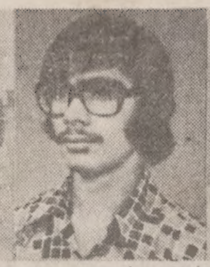
1. इन्हें देखकर अंधविश्वासियों का मानना है कि किसी को भूत व भविष्य का पता लगता है। (2, 1, 3)
5. रद्दी मकान में मिलने वाले कीड़े। (3)
6. आपकी चड्डी में गंदगी ? (3)
9. वियतनाम जिसके सहारे खड़ा है। (2)
10. ग्रीष्म ऋतु में लड़ी गई लड़ाई ? (3)
11. इसे मारने के लिए पेट में कुछ नहीं डालना पड़ता ? (2)
12. बीच में आधा गाना गाने के फलस्वरूप मेहनताना नहीं मिलेगा ? (3)
13. ईन आमों पर मिला पुरस्कार (3)
14. लम्बा न हो तो पीछे से लौटाना ! (2)

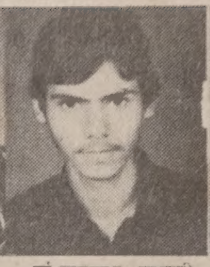
ऊपर से नीचे

1. वाशबेसिन में गायब करने की कला ? (2, 1, 3)
2. माल द्वीप में खाली नहीं है। (2)
3. तना की लगाम टूट जाये तो मुरम्मत करके दोबारा मूल्यांकन करना ! (3,3)
4. गधे का उल्टी नाक से आवाज निकालना ? (3)
7. उल्टा डांस और उसमें उल्टी करतूत इस प्रकार पालिश करना। (4)
8. टहनी के बीच में डंडा न होने का भय। (2)
12/A—इसे मारने पर याद रहता है ? (2)

अन्तिम तिथि:— २१-८-८२.

नाम ----------------
पता ----------------



ईश्वरलाल संगतानी, राजू साईकिल सर्विस, प्रताप डूंगर जोधपुर 18 वर्ष पत्रमित्रता खेलना।

हरीश 'तनेजा' पुष्प', मकान नं० 4, 713/8 पानीपत, 24 वर्ष, कहानी लिखना, दीवाना पढ़ना आदि।

जेठा नन्द सिन्धी, कमल दी हट्टी, विजय नगर, 13 वर्ष, दीवाना पढ़ना और घूमना।

संजय कुमार जैन, सर्राफा इन्दौर 20 वर्ष खेलना, पढ़ना, सिनेमा देखना।

हर्ष कृष्णात्रय कृपणात्री कुटीर, नई आबादी संगरिया, राज. 335063, 17 वर्ष

प्रदीप कुमार भटनागर, जल कल क्वार्टर नं. 2 गली नं.-4, द्वारका पुरी, मुज० नगर

विजय कुमार गुप्ता, यूनाइटेड इन्डस्ट्रीज, खेताजपुर, सम्बलपुर, उड़ीसा 21 वर्ष









सुधीरकुमार, नहरपारा, स्टेशन रोड, रायपुर म.प्र. 12 वर्ष दीवाना पढ़ना।

सुरिन्द्रसिंह भाटिया, बु० नं० 16, निराला मार्केट, निराला नगर, लखनऊ, 18 वर्ष।

तारिक विक्की, B-81/274, दिल्ली गेट, मालेर कोटला, 18 वर्ष, पत्र मित्रता।

सुधीर अरोड़ा, 60 द्वारकापुरी, मुजफ्फरनगर, 18 वर्ष, पत्र मित्रता।

बाबूलाल अग्रवाल, जनता वाच हाउस, केवड़ाबाड़ी रायगढ़, 19 वर्ष।

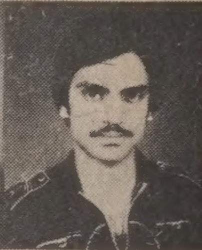
सुखराम सिंह तोमर, 6, आनन्द गंज भिरी, उज्जैन- 456001, 22 वर्ष।

एस० के० मजन 54/3 भारत सिनेमा के पास, जी हरि०, 20 वर्ष।









एस. हासन रशीद, 49, तीलजाला मस्जिद बाई, कलकत्ता-39, 25 वर्ष।

कृष्ण कारवा, पो: संगरिया जिला- श्री गंगान. (राज०) 20 व. मित्रता।

बलवंत सोले "सोनू" विनायक न्यूज एजेन्सी विदिशा (म०प्र०) 21 वर्ष, पत्र-मित्रता

टैबर अ. खालिक चौहान, गौडादासकी मस्जिद 20 वर्ष, पत्र-मित्रता दीवाना पढ़ना।

सुनील कुमार जैन, 5592, बस्ती हरफूल सिंह दिल्ली-110006, 1 वर्ष।

दिलावर हुसैन, दिलकश, रेड लि. क्लब, स्टेशन रोड, खराड़िया, 26 वर्ष,

विक्रमकुमार, अग्रवाल, हिन्द इलै०- वर्क्स, झरिया, 20 वर्ष, समाज-सेवा









ब्रह्मचारी ओमप्रकाश, थाना रोड, सीतामढ़ी, (बिहार), 20 वर्ष।

कमलकुमार सी. शर्मा, सराफास्मृती सदन, खाम गांव, 443034, 29 वर्ष

नूर आलिम 'राज', मीरगंज रेडियो लिस्नर्स क्लब, मीरगंज, 18 वर्ष।

सतीश गुप्ता, रेलवे बाजार, कांलावाली, हरियाणा, 18 वर्ष, फरमाईश भेजना।

कंवर सिंह विजय, श्री गिरिराज डेरी, मौजपुर, दिल्ली-53, 17 वर्ष।

हरीश चन्द, एफ-478, करमपुरा, नई दिल्ली, 16 वर्ष, दोस्ती करना।

जवाहरलाल, कचहरी घाट अरगली म० नं० 4/188, आगरा, 20 वर्ष।









ललित गाँधी, सीमा बुकसेन्टर, शास्त्री सर्कल, उदयपुर, 25 वर्ष।

रचक नारंग, जूनीयर इन्जीनियर, माई करोबैन स्टेशन, माडल टाऊन, भटिंडा, 26 वर्ष।

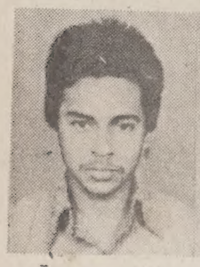
देवेन्द्र गोयल, श्री नत्थूराम प्रेम चन्द जी, कोटकपूरा, 21 वर्ष।

नारायण सिंह राणा जे-548 दक्षिण पुरी, नई दिल्ली-62, 16 वर्ष।

अरविन्द कुमार गौड, गांधी रोड, बड़ौत (मेरठ), 15 वर्ष, पत्र मित्रता

प्रकाश पंजवाणी, माऊ का बाजार, लश्कर, ग्वालियर, 21 वर्ष, फिल्में देखना।

निर्मल मुवालानी, शंकर होटल, स्टेशन रोड, बीकानेर, 20 वर्ष।







धर्मेन्द्र गुप्ता, I/90, ब्रह्मपुरी, शहदरा-दिल्ली, 17 वर्ष, दोस्ती करना, कूदना।

शैलोजकुमार, श्री जी.पी. माथुर नय्यर साहब की हवेली चौक, जोधपुर।

महेशकुमार, 6/12 ब्लाक नं. 1 गोविन्दनगर, कानपुर, 19 वर्ष।

आनन्द भान, महजंन मेटल वर्क्स टेकु, काठमांडो, नेपाल, फुटबाल खेलना।

अहमद युसूफ थीपरानी, राजपुर, डीसा (हुका) गुजरात 22 वर्ष।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंडस क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर। अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना। में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता: दीवाना फ्रैंड्स क्लब, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२,
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ----------

पता ----------

आयु ---------- शौक ----------

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।